Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वमेयं णिराकिच्चा,
ते ठिया सुसमाहिए।

जो अनुकूल परिषहों को निरस्त कर देते हैं वे समाधि में स्थित हो जाते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 4 • 31 अक्टूबर - 6 नवम्बर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-10-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

आगम का दीप जलाओ तो दिवाली है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २४ अक्टूबर, २०२२

दीपावली का पावन पर्व–दीयों का उत्सव। हमारे जीवन में अध्यात्म के दीप जलें। जीवन में प्रकाश-उद्योत कराने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र आगम के सातवें अध्याय का विवेचन करते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया कि श्रमणोपासक, श्रमणों की उपासना करने वाला जो श्रावक होता है, वह गृहस्थ होता है। उसके घर में तो सामान्यतया भोजन भी बनता है। चारों आहार बनते हैं।

चारों आहार के त्याग करने वाला कुछ भी ग्रहण नहीं करता है। तीन आहार का त्याग करने वाला पानी ग्रहण करने की छूट रखता है, शेष का उपयोग नहीं करता। श्रावक की भावना रहती है कि मेरे घर में साधु आए तो मैं मेरे घर में उपलब्ध चारों आहारों से साधुओं को प्रतिलाभित करूँ। गृहस्थ के तो आरंभ-संभारंभ होता है, पर मुनि तो अहिंसा शूर होते हैं। गृहस्थ परिग्रह से युक्त हैं, पर साधु तो परिग्रह से दूर हैं।

श्रावक जो प्रासूक-ऐषणिय वस्तु दान दे वो उचित हो। साधु के लिए कल्पनीय हो। इस प्रकार बड़ी भावना से जो दान देता है, उनकी चिंता करता है, विवेक रखता है। श्रावक के कई प्रकारों में एक प्रकार है कि श्रावक माता-पिता के समान होता है। साधुओं की साधना में सहयोग करने वाला होता है। ऐसा श्रावक जो साधु को दान देता है, उससे उसे क्या मिलता है? उत्तर दिया गया कि जो श्रावक साधु को प्रासूक-ऐषणीय वस्तु दान देता है, उससे वह साधु के भीतर समाधि पैदा करता है। वह श्रमणोपासक भी उसी समाधि को प्राप्त करेगा। दान का फल मिलेगा।

श्रावक के जीवन में श्रद्धा, विवेक और ज्ञान हो। साथ में श्रावक श्रमणों की उपासना करने वाला व ऐषणिय दान देने वाला हो। साधु भी गोचरी में जागरूक रहे।

आज दीपमालिका का त्योहार है। गृहस्थों के लिए उत्सव-खुशी का त्योहार है। हम जीवन में दीप जलाने का प्रयास करें। हम ज्ञान के दीप जलाएँ। शास्त्रों का स्वाध्याय चारित्रात्माएँ करें। मिट्टी में दीप जला दें। अज्ञानी को ज्ञानी बनाएँ। ज्ञानार्जन की अनेक विधियाँ–पाठ्यक्रम वर्तमान में चल रहे हैं। ज्ञान का आलोक प्राप्त करने का प्रयास करें। मुमुक्षु काल जीवन का स्वर्णिम अवसर है।

पहले खुद का दीया जले, तो दीये से दीया जल सकता है। ध्यान भी ज्योति जलाने का साधन बन सकता है। पूज्यप्रवर ने ध्यान का प्रयोग करवाया।

आज चतुर्दशी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी-मर्यादा का वाचन किया एवं प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। साधु-साध्वियों ने सामूहिक लेख-पत्र का वाचन किया। साध्वियों ने दीपावली के गीत का संगान किया। तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर ने करवाए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि प्रकाश सबसे उज्ज्वल है। जीवन में प्रकाश का महत्त्व है। दीपावली उजाले का प्रतीक है। हमारे जीवन में आध्यात्मिक प्रकाश हो। उसके लिए हमें आत्मा के गुणों का विकास करना होगा। हमें सिद्धि प्राप्त हो। हम कषायों को उपशांत करने का प्रयास करें, आत्मा को निर्मल बनाएँ। सम्यक् दिशा में पुरुषार्थ करें।

मुमुक्षु बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मंत्री मुनि मगनलाल जी हमारे धर्मसंघ के विश्वस्त संत थे : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २२ अक्टूबर, २०२२

पुण्य कालूगणी अभिवंदना का छठा दिवस। परमपूज्य महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया–भंते! एक श्रमणोपासक, श्रमणों की उपासना करने वाला श्रावक वह साधुओं के प्रवास स्थल में बैठा है। सामायिक की साधना में है। उस श्रमणोपासक के इर्यापथि की क्रिया होती है या सांप्रदायिकी क्रिया होती है।

उत्तर दिया गया कि इर्यापथिकी क्रिया वीतराग के होती है। ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान में होती है। चौदहवें गुणस्थान में तो कोई क्रिया या बंध होता ही नहीं है। श्रमणोपासक सामायिक की साधना में है, साधुओं के ठिकाने में है। साधुओं के सान्निध्य में बैठा है, ऐसी स्थिति में वो समता भाव में होगा, पर वो श्रावक अविरति वाला है। ऐसी स्थिति में उसकी आत्मा अधिकरण वाली है, इसलिए उसके इर्यापथिकी क्रिया नहीं होती, सांप्रदायिकी क्रिया ही होती है कारण पहले गुणस्थान से दसवें गुणस्थान तक कषाय रहता है।

साधु के तो आजीवन सामायिक होती है। हमारे मंत्री मुनि मगनलाल जी स्वामी ने पूज्य मघवागणी के पास दीक्षा ग्रहण की थी। परमपूज्य कालूगणी भी मघवागणी के पास ही दीक्षित हुए थे। मुनि अवस्था से ही दोनों में मैत्री भाव था। उम्र में मगन मुनि बड़े थे। मैत्री संबंध भी लंबे समय तक चला था। विश्वस्त आदमी कड़ी बात कह दे तो सहनी पड़ती है। पर दोनों मित्र की तरह बात करते थे।

हमारे धर्मसंघ में अनेक साधु-साध्वियाँ प्रमुख रूप से काम करने वाले हुए हैं, आज भी हैं। अपने ढंग से सेवा करते हैं। मगनमुनि कालूगणी के समय दीवान की तरह सेवा करते थे। कालूगणी भी उनकी राय लिया करते थे। कई-कई श्रावक भी आचार्यों के विश्वास पात्र हुए हैं। मंत्री मुनि तो गुरुदेव तुलसी ने उन्हें घोषित किया। मगन मुनि हमारे धर्मसंघ के स्तंभ थे। हमें उन पर नाज भी है। वर्तमान में भी कुछ संत उनके जैसे हैं। हमारे धर्मसंघ में मगन मुनि जैसे संत होते रहे।

मंत्री मुनि ऐसे विरले संत थे कि वे संघ हित आचार्य तुलसी को भी लाल आँख दिखा देते थे। इतना उनका हमारे धर्मसंघ में महत्त्व था। कारण उन्होंने कालूगणी को उनके अंत समय में आश्वस्त किया था कि तुलसी की उम्र छोटी है, उसकी चिंता आप न करावें। आचार्य तुलसी के वे बाबा की तरह थे और दायित्व भी निभाया था। वैसे वे भक्ति और विनय भाव भी बहुत रखते थे।

'मंत्री मुनि मगनेश थांरी याद सतावै रे।' गीत का संगान आचार्यप्रवर ने किया।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि पूज्य कालूगणी धर्मसंघ के प्रभावशाली आचार्य थे, जिन्होंने धर्मसंघ को नया आकाश, प्रकाश दिया। दो-दो युगप्रधान उत्तराधिकारी दिए। पूज्य कालूगणी को विकसित करने वाले तीन व्यक्तित्व थे। पूज्य मघवागणी, जिन्होंने उन्हें दीक्षा प्रदान की। दूसरी थी उनकी माँ छोगांजी एवं व्यक्तित्व है, मुनि मगनलाल जी स्वामी।

(शेष पेज २ पर)

पूज्य कालूगणी हमारे गुरुओं के गुरु रहे हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २३ अक्टूबर, २०२२

कार्तिक कृष्णा तेरस–परम पावन परम प्रभु भगवान ने आज ही के दिन अंतिम अनशन किया था। कालू अभिवंदना सप्ताह का भी अंतिम दिवस। परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कालू महाश्रमण समवसरण में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज हमारा विकास है कि हम ग्रंथ लेकर बाँच रहे हैं। आज से ८० वर्ष पहले जब कालूगणी प्रवचन फरमाते थे तो उनके हाथ में ऐसे ग्रंथ रहे थे या नहीं? पहले तो हरी पटड़ी-पाना हाथ में रखते थे। विकास के मूल को तो हम भिक्षु स्वामी को ही मान लें। नए पंथ की स्थापना कर उसे रास्ते पर ला देना बहुत बड़ी बात होती है। बना-बनाया राजपथ मिल जाए तो उस पर चलना तो आसान होता है।

भिक्षु स्वामी के उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपने ढंग से प्रगति की है। जयाचार्यप्रवर ने कितना विकास किया था। ऋषि रायप्रवर ने एक सूत्र जयाचार्य को दे दिया था कि चोटी तेरे हाथ में है। आचार्य भिक्षु के बाद जयाचार्यप्रवर और उनके बाद आचार्य तुलसी ने राजस्थानी भाषा में कितने ग्रंथों का सृजन किया था।

सात दिनों में ये व्याख्यानमाला सी हो गई, जो पूज्य कालूगणी के जीवन को उजागर करने वाली है। कालूगणी की जन्म शताब्दी २०३३ में मनाई गई थी तब ऐसा माहौल बना था। सात दिनों में सांगोपांग विवेचना की गई है। हमारे धर्मसंघ में विकास हुआ है। साध्वियों-समणियों व साधुओं में अंग्रेजी का विकास हुआ है। कईयों के डॉक्टर व एमबीए आदि की उपाधियाँ लगी हैं।

विकास में आगे भी बढ़ना और सिंहावलोकन भी करना, कभी विहंगावलोकन भी करना। कालूगणी ने ही साध्वियों की शिक्षा विकास का निर्देश फरमाया था। कालूगणी के युग में तुलसी-महाप्रज्ञ जैसे कितने संतों का विकास हुआ था। आज तो साध्वी समुदाय भी बहुत आगे बढ़ा है। विकास के प्रति जागरूक रहना है कि और विकास कहाँ हो सकता है। जहाँ नहीं हो रहा है और होना चाहिए, हम उस पर भी ध्यान दें।

बढ़ो, रुको, पीछे की समीक्षा भी करो। पूज्य कालूगणी के जन्म स्थान पर सात दिनों की व्याख्यानमाला पूज्य कालूगणी हमारे गुरुओं के गुरु रहे हैं। मैं कालूगणी के प्रति श्रद्धा-सम्मान का भाव अर्पण करता हूँ। उनसे हमें प्रेरणा मिलती रहे। हम सद्विकास की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

आज धनतेरस भी है। गृहस्थ के लिए पैसा धन है। दो धन और हैं–स्वाध्याय का धन और संतोष धन। जब आए संतोष धन, सबधन धूलि समान। साथ ज्ञान-साधना का धन भी बढ़ता रहे। आज से तेले भी शुरू हुए होंगे। कल दिवाली है। आतिशबाजी में संयम रखें। परसों दीपावली है। 'लोगुत्तमे समणे णायपुते' का जप करें।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्य कालूगणी का अपना कर्तृत्व-व्यक्तित्व था। मुझे कालूगणी विकास के पुरोधा के रूप में दिखाई देते हैं। उनके शासनकाल में संघ का अभूतपूर्व विकास हुआ था। नए सिंघाड़े साधु-साध्वियों ने बनाए और जनपद विहार करवाया। दीक्षा लेने वालों की संख्या में भी श्रीवृद्धि हुई। उन्होंने क्षेत्रों का भी विकास किया। वे पुस्तक भंडार के विकास में भी जागरूक थे। समृद्ध भी बनाया। वे कलात्मक भी थे।

मुनि ध्रुवकुमार जी ने गीत, साध्वी प्रबुद्धयशा जी, साध्वी केवलयशा जी, साध्वी प्रभाजी, समणी सत्यप्रज्ञा जी ने अपनी श्रद्धा भावना अर्पित की।

मुमुक्षु बहनों ने गीत, व्यवस्था समिति अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, सूरजमल नाहटा, ज्ञानशाला प्रस्तुति, सुमेरमल सुराणा, मालू परिवार, प्रिया दुधोड़िया, संतोष भंसाली, सज्जनदेवी पारख एवं अलका बैद ने भी अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मंत्री मुनि मगनलाल जी हमारे धर्मसंघ के विश्वस्त....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इन्होंने कालूगणी का अथ से लेकर इति तक पूरा साथ निभाया। दोनों में एकात्मक, तदात्मक भाव था। कालूगणी दीक्षा लेते ही मुनि मगनलाल जी के साझ में आ गए थे। दोनों का आत्मीय भाव अंत तक बना रहा था। कालूगणी भी उन्हें मुनि अवस्था में जैसा सम्मान था, वैसा अंत तक रखा था। मुनि कालू का आचार्य नियुक्ति पत्र का वाचन एवं आचार्य की धवल चद्दर भी मुनि मगनलाल जी ने ही ओढ़ाई थी। उनकी जोड़ी हमें भी विनय और श्रद्धा का भाव आचार्य के प्रति रखनी चाहिए, यह प्रेरणा देती है। 'श्री कालू गुरुवर को हम ध्यायें।' गीत का सुमधुर संगान किया।

स्थानीय सभाध्यक्ष विजय सेठिया, नरपत मालू, स्थानीय महिला मंडल परिसंवाद से, तारामणी दुधोड़िया ने गीत, हर्षलता दुधोड़िया ने कविता, मनोज नाहटा ने गीत से अपनी श्रद्धा भावना अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि केवलज्ञान के साथ केवल दर्शन भी होगा।

भगवान महावीर के जीवन प्रसंग से जुड़ने से अमावस्या की रात्रि हुई धन्य : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २५ अक्टूबर, २०२२

कार्तिक कृष्णा अमावस्या–वर्तमान अवसर्पिणी काल के चरम तीर्थंकर श्रमण भगवान महावीर का परिनिर्वाण दिवस। आज की अमावस्या की अर्धरात्रि में परम प्रभु परम पद को प्राप्त हो गए थे। आज की ही रात्रि में प्रभु के प्रथम गणधर गौतम स्वामी को भी कैवल्य की प्राप्ति हुई थी। दो-दो महान विभूतियों के जीवन प्रसंग से जुड़ने के कारण अमावस्या भी धन्य हो गई थी।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पावन आगम वाणी का रसास्वाद करवाते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न गिया गया–भंते! अकर्म की गति होती है क्या? हाँ होती है। एक आत्मा जो कर्म युक्त है, संसारी अवस्था में है तो उसका तो अपने ढंग से पुनर्जन्म हो जाता है। परंतु जिस साधु को केवलज्ञान हो गया है। तेरहवें गुणस्थान में थोड़ा सा समय बचा और वह चौदहवें गुणस्थान में चला गया जिसका काल मान पाँच ह्रस्वा अक्षर जितना है। शेष चार कर्म नष्ट होकर आत्मा अकर्म बनती है।

आत्मा अकर्म है, फिर गति किस आधार पर करती है। उत्तर दिया गया–निसंगता निरंजनता, गति-परिणाम, बंधन-छेदन और पूर्व प्रयोग इन कारणों से अकर्म में गति होती है। पुद्‌गल का स्वभाव है, नीचे जाना और आत्मा का स्वभाव है ऊपर आना। ये कारण बताए गए हैं।

आज कार्तिक कृष्णा अमावस्या है। आज अकर्म गति हुई थी। परम प्रभु भगवान महावीर आज की रात में अशरीर हो गए थे। आत्मा सिद्ध मुक्त हो गई थी। गौतम स्वामी प्रभु के प्रमुख शिष्य थे। पर भगवान की विद्यमानता में उन्हें केवलज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था।

(शेष पेज ३ पर)

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के आयोजन

मानसरोवर गार्डन

कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण के रूप में आंचल पटवा ने भिक्षु अष्टकम के साथ किया। उसके पश्चात सभा के अध्यक्ष बिमल भंसाली, मंत्री मुकेश बोरड़ ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संयोजन मधु रांका ने किया। क्षेत्र के सुमधुर गायकों में सर्वप्रथम जोड़े से मनोज-कुसुम बोरड़ ने स्वामीजी को समर्पित भवन के माध्यम से स्मरण किया। उसके बाद क्रमश: निर्मल बैद, रंजुला भंसाली, नव्या बुच्चा, हेमंत बैद, प्रेरणा लुणावत, जया पटवा, समता भूतोड़िया, सुरेंद्र लुणावत, मुकेश बोरड़ व विनोद बोरड़ ने आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति देते हुए भजनों की प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम संयोजिका मधु रांका व सांस्कृतिक प्रभारी नितिन फूलफगर के प्रयासों से कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ। इस अवसर पर सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति रही। मूलचंद चोरड़िया ने आभार ज्ञापित किया।

सरदारशहर

तेरापंथ धर्मसंघ काद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के २२०वें चरमोत्सव तेरापंथ भवन में 'एक शाम सांवरिये के नाम' भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी सुमतिप्रभा जी का सान्निध्य रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी सुमतिप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया एवं साध्वी चारित्रयशा जी ने मंगलाचरण किया।

कार्यक्रम में स्थानीय संगायकों ने गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के बीच में साध्वीश्री जी द्वारा भिक्षु स्वामी के ऊपर सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए। श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री धीरज छाजेड़ ने किया।

सिकंदराबाद

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में २२०वें भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं के मंगलाचरण से हुआ। चांदबाई बैद ने गीतिका के माध्यम से प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने आचार्य भिक्षु के क्रांतिकारी व्यक्तित्व को उजागर किया। सरला भूतोड़िया ने कविता के माध्यम से भावांजलि अर्पित की। साध्वी संपत्तिप्रभा जी ने कहा कि भिक्षु का नाम चमत्कारी है।

साध्वी रश्मिप्रभा जी ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाए। साध्सवी कल्पयशा जी ने कहा कि उस समय आचार्य भिक्षु का स्वागत करने वाले तो गिने चुने ही लोग थे, लेकिन विरोध करने वालों की पूरी जमता खड़ी थी।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु एक सत्य संघायक एवं सिद्धांतवादी आचार्य थे। आचार्य भिक्षु ने सत्य को न केवल जाना अपितु उन्होंने सत्य को अपने जीवन में जिया भी था। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में २२०वाँ आचार्यश्री भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु महान सत्य शोधक आचार्य थे। शुद्ध साधुत्व का पालन करना और जनता को भी धर्म का शुद्ध स्वरूप बतलाना उनका मुख्य ध्येय था। उन्होंने २६० वर्ष पूर्व जो धर्मक्रांति की थी उसके फलस्वरूप उन्हें भयंकर कष्टों का सामना करना पड़ा।

तेरापंथ संघ का प्रवर्तन कर उन्होंने अनुशासन को सर्वाधिक महत्त्व दिया और मर्यादा, व्यवस्था, संगठन का निर्माण किया। आचरण और अनुशासन की नींव से तेरापंथ को खड़ा किया। भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांत को आत्मसात किया और उन्हें परिभाषित कर साधना का मार्ग प्रशस्त किया।

मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि तेरापंथ सभा मंत्री सुमित जैन, तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, तेममं मंत्री सपना युवराज जैन, महासभा आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन, महासभा प्रभारी केशब नारायण जैन ने विचारों की प्रस्तुति दी। धम्म जागरण में सामूहिक गीतों का संगान किया गया। सिंधिकेला, बगुमुंडा के श्रावक समाज सहयोगी बने।

भक्तांमर अनुष्ठान का आध्यात्मिक आयोजन

माणसा।

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में भक्तामर अनुष्ठान का आध्यात्मिक आयोजन किया गया। साध्वीवृंद ने सभी श्रावक-श्राविकाओं को भक्तामर स्तोत्रम् का सामूहिक अनुष्ठान करवाया। तत्पश्चात साध्वीश्री जी ने प्रेरणा पाथेय देते हुए सभी को भक्तामर की रचना का इतिहास एवं भक्तामर का महत्त्व बतलाया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि भक्तामर स्तोत्रम् जैन धर्म के दिगंबर-श्वेतांबर सभी संप्रदायों में मान्य है, केवल श्लोकों की संख्या कहीं ४८ तो कहीं ४४ मानी जाती है। तेरापंथ धर्मसंघ में ४४ श्लोक मान्य हैं। भक्तामर का कौन सा श्लोक किस प्रकार लाभदायक है इसका साध्वीश्री ने वर्णन किया एवं उसके अनुष्ठान की विधि बताई।

साध्वीश्री जी ने कहा कि कैंसर आदि भयंकर से भयंकर रोक का उपचार भी भक्तामर से संभव है। 'भक्तामर हिलींग' पर तो पीएच०डी० भी की गई है एवं कई पुस्तकें भी लिखी गई हैं।

विजापुर से समागत सहयोगी हितेश खमेशरा द्वारा साध्वीश्री को 'उवासगदसाओ' आगम भेंट कर विजापुर एवं माणसा में 'आगम-मंथन प्रतियोगिता' का आगाज किया गया। कार्यक्रम में माणसा एवं विजापुर आदि निकटवर्ती क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में पुष्पा देवी सुराणा का तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। स्व० जेठमल सुराणा की धर्मपत्नी पुष्पा देवी ने ६१ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान कर गंगाशहर के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ दिया। हाल ही के वर्षों में पुष्पा देवी ने ही इतनी लंबी तपस्या गंगाशहर में स्वीकार की है। ६१ दिन तक जल के सिवाय निराहार रहकर इन्होंने दुगुना मासखमण तक कर लिया।

मुनि शांतिकुमार जी ने कहा कि तपस्या करना बड़ी बात होती है। उससे भी बड़ी बात तपस्या के पश्चात भी संयम रखना है। तपस्वी बहन ने इतनी बड़ी तपस्या कर कीर्तिमान रचा है। तपस्या से आध्यात्मिक विकास होता रहे, मंगलकामना।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि तपस्या के साथ इहलोक एवं परलोक में भी किसी प्रकार की कामना जुड़ी हुई नहीं होनी चाहिए। तपस्विनी पुष्पा देवी ने ६१ दिन का तप कर गंगाशहर में तप का पुष्प खिलाया है। इस चातुर्मास में अनेकों तपस्याएँ हुई हैं, किंतु इतना बड़ा तप अपने आपमें विशेष है।

संतों ने सामूहिक गीत का संगान किया। अनुमोदना के क्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेममं मंत्री ममता रांका, तेयुप संगठन मंत्री रोहित बैद, पवन छाजेड़, मोना सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए। पारिवारिक सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी। पूर्व महापौर नारायण चोपड़ा ने संदेश का वाचन किया।

सम्मान के क्रम में अमरचंद सोनी, नवरतन बोथरा, जतन संचेती, जीवराज सामसुखा, मनोहर नाहटा, संपत बाफना, महावीर फलोदिया, ममता रांका, संजू लालाणी, मधु छाजेड़, रेणु बाफना आदि पदाधिकारियों ने तपस्वी का साहित्य, अनुमोदना पत्र द्वारा सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री रतनलाल छल्लाणी ने किया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की एक दिवसीय कर्नाटका राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

हुबली।

मुनि हिमांशु कुमार जी, मुनि हेमंत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, हुबली द्वारा 'सोपान' प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग कर्नाटक के १७ क्षेत्रों ने भाग लिया। ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में मुनि हिमांशु कुमार जी ने सिखाया कि प्रशिक्षक की भूमिका कैसी होनी चाहिए? प्रशिक्षक प्रशिक्षण कैसे दे, इस विषय पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। प्रशिक्षक में किन सात प्रकारों के गुणों की आवश्यकता होती है, उन सातों गुणों को व्याख्यापूर्वक बताया।

मुनि हेमंत कुमार जी ने बताया कि प्रशिक्षक का आचार, व्यवहार किस तरह का होना चाहिए। कार्यक्रम लगभग चार चरणों में संपादित हुआ। दूसरे सत्र में ज्ञानशाला राष्ट्रीय प्रशिक्षक डालिमचंद नवलखा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। तीसरे सत्र में मुनि हेमंत कुमार जी ने समझाया कि ज्ञानार्थियों को प्रशिक्षण कैसे दें? बच्चों के तर्कों का जवाब कैसे दें? आदि विषयों पर समझाया। चौथे सत्र में तेरापंथ सभा के मंत्री केसरीचंद गोलेछा द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी गई। कर्नाटक स्तरीय ज्ञानशाला के संयोजक मानकचंद संचेती ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

जिज्ञासा समाधान सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें सभी प्रशिक्षिकाओं की जिज्ञासा का समाधान किया गया। कर्नाटक की सभी क्षेत्रों से उपस्थित प्रशिक्षिकाओं को मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला, हुबली की प्रशिक्षिका भाग्यवती बागरेचा द्वारा किया गया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा गीतिका भी प्रस्तुत की गई। स्वागत भाषण ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कंचन चोपड़ा द्वारा किया गया।

आभार ज्ञापन स्थानीय ज्ञानशाला संयोजक महेंद्र वेदमूथा द्वारा किया गया।

लोगस्स कल्प साधना अनुष्ठान

विजयनगर।

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में गणधर सुधर्मा कृत 'लोगस्स कल्प साधना' अनुष्ठान के अंतर्गत मुनि प्रियांशु कुमार जी ने मंत्रों की महत्ता को समझाते हुए उनकी महिमा का वर्णन किया। मुनि रश्मि कुमार जी ने बीज मंत्रों की जानकारी दी।

इस कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल एवं तेयुप के अध्यक्ष, पदाधिकारीगण, सदस्यगण एवं श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

भगवान महावीर के जीवन प्रसंग से जुड़ने से....

(पृष्ठ २ का शेष)

भगवान की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी पर जैन ध्वज, जैन प्रतीक और जैन ग्रंथ सामने आए। ये जैन एकता से संबंधित है। संवत्सरी एकता का प्रश्न भी आया था, पर वह तो नहीं हो सका।

आज के दिन कितने करने वाले तेले की तपस्या भी करते हैं। कार्तिक की अमावस्या भी एक पर्व बन गया। हम भगवान महावीर की शासना में आध्यात्मिक साधना करते रहें, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने जप–'लोगुत्तमे समणे णाय पुत्ते' आज के दिन करने की प्रेरणा प्रदान करवाई। विकल्प यह भी है–'महावीर स्वामी केवलज्ञानी, गौतम स्वामी चऊनाणी।' रात्रि १२ बजे बाद महावीर पहुँचे निर्वाण, गौतम पाये कैवल ज्ञान। हम वीतराग प्रभु का जप करें। कई गीत हैं, वे भी गा सकते हैं।

'जय महावीर भगवान' गीत का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने करवाया। हम प्रभु महावीर के जीवन से प्रेरणा लें, हमारी भी अकर्म वाली गति हो। हम सिद्ध गति को प्राप्त करें, यह हमारी कामना हो। पूज्यप्रवर ने तेले व अन्य तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

रिश्तों का उत्सव मनाएँ

रोहिणी, दिल्ली।

तेममं द्वारा डॉ० साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम प्रारंभ किया। युवतियों द्वारा प्रेरणा सम्मान से मंगलाचरण किया। महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु जैन ने सभी का स्वागत किया। देवरानी-जेठानी के जोड़े के रूप में बड़े ही उत्साह से ११ जोड़ियों ने भाग लिया। साथ ही दीपावली के मौके को देखते हुए वंदनवार व रंगोली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें बहनों ने उत्साह से भाग लिया।

डॉ० साध्वी कुंदनरेखा जी ने अभातेममं की सराहना करते हुए कहा कि अभातेममं ने बहुत ही अच्छे विषय पर कार्यशाला रखी है तथा संयुक्त परिवार के महत्त्व के बारे में बताया। प्रत्येक देवरानी-जेठानी ने अपने रिश्तों की अहमियत बताते हुए अपने विचार रखे। अभातेममं कोष ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने रिश्तों की घनिष्ठता, प्रेम और स्नेह का महत्त्व बताया। सभी देवरानी-जेठानी का दुपट्टे से सम्मान किया गया। 'कितना पहचानते हैं आप एक-दूसरे को' प्रश्नोत्तर द्वारा देवरानी-जेठानी की छोटी-सी परीक्षा ली गई। उनके विचारों और प्रश्नों के आधार पर प्रथम स्थान सोनू बैद व ममता बैद, द्वितीय स्थान पर नीतू गोलछा व मीनू गोलछा और प्रीति घोषल व बबीता घोषल संयुक्त रूप से रहे। जिसकी जज पुष्पा बैंगानी थे।

रंगोली प्रतियोगिता के जज सरोज छाजेड़ व सज्जन गिड़िया थे। अलका सुराणा व जयश्री सेठिया संयुक्त रूप से प्रथम, गरिमा सुराणा द्वितीय और श्रद्धा सुराणा व प्रीति पारख संयुक्त रूप से तृतीय रही। वंदनवार प्रतियोगिता के जज सरिता चोपड़ा व मीना रायजादा थे। प्रीति पारख प्रथम, रोहिणी जैन द्वितीय और शालिनी रामपुरिया तृतीय स्थान पर रहे। सभी को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री इंदिरा सुराना ने किया। आभार मंडल के उपाध्यक्ष सरोज सिपानी ने किया।

विराट जैन महिला सम्मेलन

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी एवं श्रमणसंघीय साध्वी श्यामा महाराज के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में अणुव्रत भवन में विराट जैन महिला सम्मेलन 'संवर्धन' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दिगंबर समाज, मंदिरमार्गी समाज, स्थानकवासी समाज एवं तेरापंथ जैन समाज के लगभग इक्कीस मंडलों की उपस्थिति रही।

महिला मंडल के विविध आयोजन

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज संपूर्ण जैन समाज की बहनों की विशाल उपस्थिति मन को प्रसन्नता प्रदान कर रही है। संवर्धन एक ऊर्जा है। जिस व्यक्ति के भीतर नेगेटिव एनर्जी होती है वह विध्वंस की ओर बढ़ता है। जिसके भीतर पोजिटिव एनर्जी होती वह सृजन करता है। संवर्धन पोजिटिव एनर्जी है। हम समता, ममता, क्षमता का संवर्धन करें जो हमारे व्यक्तित्व को निखारेगा। संस्कारों का संवर्धन करें, जो आपके भविष्य को शानदार बनाएगा। बच्चों की जीवन बगिया को सुवासित कर देगा।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने कहा कि संवर्धन के लिए जरूरी है हृदय को क्लीन रखें। गलतियों का करेक्शन करते रहें एवं साथ कनेक्शन रहें। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने संवर्धन के लिए फोर सी का फार्मूला दिया। क्रिटीसाइज न करें, करेक्टर अच्छा रखें। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने मंच का संचालन किया। साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि पूर्व महापौर डॉ० रत्ना जैन ने कहा कि बच्चे वही सीखते हैं जो वो देखते हैं, जैन महिलाएँ दुनिया में सबसे ज्यादा शिक्षित होती हैं, जेंडर डिस्क्रिमिनेशन को मिटाने की पहल करने को कहा, उन्होंने अणुव्रत की विशालता एवं उसके महत्त्व के बारे में बताया।

महिला मंडल अध्यक्षा उषा बाफना ने स्वागत भाषण दिया। युवती बहनों ने वेलकम सॉन्ग की प्रस्तुति दी। महिला मंडल मंत्री सुनीता जैन, कार्यक्रम संयोजक हेमलता जैन, रचना सेठिया एवं कुसुम बोथरा ने आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। महिला मंडल ने संवर्धन गीत की प्रस्तुति दी।

क्षमा पर कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत क्षमा पर कार्यशाला का आयोजन महिला मंडल द्वारा हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी अमितरेखा जी द्वारा रचित क्षमा गीतिका मंगलाचरण के रूप में मंडल की बहनों द्वारा प्रस्तुत की गई। उपाध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी का स्वागत करते हुए सभी पदाधिकारी व कार्यसमिति बहनों से क्षमायाचना की और क्षमा पर अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि क्षमा दो शब्दों का वाक्य है हमारे सामने कैसी भी परिस्थिति आए हमें धैर्य को नहीं छोड़ना चाहिए और क्षमा का भाव रखना चाहिए। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने दस धर्मों में पहला धर्म क्षमा धर्म के बारे में उद्बोधन दिया।

हमें मैत्री की भावना, सहनशक्ति और शांति से जीवन जीना चाहिए। सहमंत्री हेमलता सुराणा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया।

'संयम-एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' कार्यशाला का आयोजन

किशनगढ़।

तेरापंथ भवन में तेममं के तत्त्वावधान में 'संयम-एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम से पूर्व अर्हत वंदना का समूह संगान हुआ। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि भारतीय संस्कृति का प्राण तत्त्व है—संयम हम युद्ध करें स्वयं के विरुद्ध अर्थात् हमारे जीवन को नकारात्मक भावों, उनके विरुद्ध संयम के साथ डटे रहें।

मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि तपोबली, मनोबली और आत्मबली संयम कर सकते हैं। संयम की साधना से खुल जाते हैं मोक्ष के कपाट। अतः संयम से प्रत्येक समस्या का समाधान मिलता है।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि संयम जीव हो अजीव सभी का अपेक्षित है। कार्यक्रम में महिला मंडल सदस्यों ने गीत का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्ष अंजु छाजेड़ ने स्वागत में विचार रखे। मंत्री करुणा जैन, पूर्वाध्यक्ष नगीना गेलड़ा ने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में सामान्य प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें २५ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष कविता गेलड़ा ने किया। मंत्री करुणा जैन ने आभार व्यक्त किया।

स्वास्थ्य परीक्षण कैंप का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेममं के तत्त्वावधान में वृहद स्तर पर स्वास्थ्य परीक्षण मास्टर हेल्थ चेकअप कैंप, आई कैंप, डेंटल कैंप, फैट स्क्रीनिंग कैंप एवं फिजियोथैरेपी कैंप का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

सर्वप्रथम महिला मंडल की बहनों ने एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी से मंगलपाठ श्रवण किया। नेत्र परीक्षण कैंप के प्रायोजक विजयराज कटारिया एवं उपस्थित सभी संस्थाओं के गणमान्य महानुभावों तथा दुबई से समागत संतोष बाई मानमल मूथा की उपस्थिति में कैंप का उद्घाटन हुआ। आगंतुकों का स्वागत अध्यक्ष पुष्पा देवी हिरण ने किया।

मास्टर हेल्थ चेकअप कैंप में थायरोकेयर टीम के डॉ० विजय कुमार का विशेष श्रम रहा। लगभग ११० जनों ने अपना मास्टर हेल्थ चेकअप करवाया।

नेत्र परीक्षण कैंप में अग्रवाल हॉस्पिटल की टीम के सभी कार्यकर्ताओं का भरपूर सहयोग रहा। इसके प्रायोजक विजयराज, भरत कटारिया रहे। लगभग १५० लोगों ने आँखों की जाँच करवाई।

डेंटल कैंप में डॉ० संतोष नाहर द्वारा सेवा दी गई। लगभग ३५ सदस्यों ने ट्रीटमेंट करवाया। स्क्रीनिंग कैंप के डॉ० ओम देसाई एवं बनवारी तथा मनीष ने सभी भाई-बहनों का परीक्षण किया। लगभग ६० भाई-बहनों ने परीक्षण करवाया। फिजियोथैरेपी कैंप में विजयलक्ष्मी सियाल, प्रियंका जैन ने सेवाएँ दीं। लगभग ४७ भाई-बहनों ने इसका लाभ लिया।

महिला मंडल द्वारा प्रायोजक विजयराज एवं डॉक्टर्स का सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

कार्यक्रम की संयोजिका हेमलता नाहर, कंचन भंडारी, लता पारख एवं आशा मांडोत का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान रहा।

नीवी तप अनुष्ठान का आयोजन

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा नवरात्रि के अवसर पर आध्यात्मिक अनुष्ठान 'नीवी तप' साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। नीवी बाह्य तप है, निर्जरा का एक भेद है और रस परित्याग है। दिन में एक बार एक ही आसन में बैठकर विगय रहित भोजन करना जिसमें दूध, दही, घी, गुड़, चीनी, कड़ाई विगय आदि के प्रत्याख्यान के साथ ही रात्रि भोजन और सचित्त का त्याग किया जाता है।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने नीवी तप करने वाले साधकों के प्रति मंगलकामनाएँ व्यक्त की और सामूहिक रूप से नीवी तप का प्रत्याख्यान करवाया गया। साध्वीश्री जी ने महाश्रमण अष्टकम का लयबद्ध संगान किया और श्रावक समाज को इसे कंठस्थ करने की प्रेरणा दी।

तेममं अध्यक्ष मीना बाबेल ने नीवी तप संयोजिका उपाध्यक्षा मैना कांठेड एवं यशवंत सुतरिया ने अथक श्रम एवं समय का नियोजन करते हुए इस अनुष्ठान को सफल बनाने का प्रयास किया। कार्यकारिणी सदस्या कोषाध्यक्ष सुमन दुगड़, प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की जागरूकता से कार्यक्रम सफल रहा। नीवी तप के आध्यात्मिक अनुष्ठान के प्रायोजक प्रमिला, निर्मल, चक्षु गोखरू रहे। सभी के प्रति मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने आभार व्यक्त किया।

चलें गाँव की ओर

उधना।

अभातेममं के निर्देशन में 'निर्माण' परियोजना के अंतर्गत प्रोजेक्ट Aid to Assisting Hands का दूसरा चरण तेरापंथ महिला मंडल, उधना द्वारा सूरत के पास डाँग गाँव में आयोजित किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा जसु बाफना ने दीपावली की शुभकामनाएँ दी और गाँव के सरपंच, सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

एडवोकेट दुर्गा कच्छारा ने सभी बहनों को कानूनी जानकारी दी और बताया कि आप कानून से डरें नहीं, आपकी सुरक्षा के लिए कानून आपके साथ है।

कपड़े, कंबल, बिस्किट, नमकीन आदि वस्तु का वितरण किया। गाँव के प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को बिस्किट और नमकीन दी। गाँव के सरपंच और वार्ड के सदस्य राजूभाई उपस्थित थे।

कन्या मंडल, किशोर मंडल, महिला मंडल के पूर्व अध्यक्ष मंजु नौलखा, कन्या प्रभारी नीलम डांगी व कार्यकारिणी बहनों की उपस्थिति रही।

सामूहिक नीवी का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में अरुणा देवी डोसी की अध्यक्षता में सामूहिक नीवी का आयोजन किया गया।

मंत्री ममता मेहता ने बताया कि शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी की प्रेरणा एवं साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी आदि के प्रयासों से जसोल में लगभग १७७ नीवी हुई जो अपने आपमें एक रिकॉर्ड है।

इसमें ज्ञानशाला, कन्या मंडल, तेयुप, तेममं एवं तेरापंथ सभा के सदस्यों ने नीवी में अपनी साझेदारी निभाई। प्रायोजक परिवार के रूप में स्व० कमलादेवी ढेलड़िया की स्मृति में दीपचंद राजेंद्र कुमार ढेलड़िया बोहरा परिवार रहे। मंत्री ममता मेहता ने आयोजक और प्रायोजक परिवार का तेरापंथ महिला मंडल जसोल की तरफ से आभार ज्ञापन किया।

तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

भीलोड़ा।

डॉ० मुनि मदन कमार जी के सान्निध्य में महावीर भवन में तप अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया। डॉ० मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि भीलोड़ा उत्तर गुजरात का श्रद्धा का विशिष्ट क्षेत्र बन गया है। मात्र सात परिवारों में चातुर्मास होना एक विलक्षण घटना है। परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुपम कृपा का फल है। मुनिश्री ने कहा कि तपस्या आत्म शोधन का मार्ग है। जन्म-जन्मांतर के संचित कर्म तप की आराधना से क्षीण हो जाते हैं। तपस्या का उद्देश्य मात्र निर्जरा और मोक्ष होना चाहिए। पूजा-प्रतिष्ठा और भय-प्रलोभन से मुक्त होकर की जाने वाली तपस्या श्रेष्ठ एवं सकाम होती है।

प्रमिला देवी पोखरना एवं प्रमिला देवी दक ने मासखमण-३१ दिन की तपस्या करके तपस्या के क्षेत्र में कीर्तिमान बनाया है तथा भारी मनोबल का परिचय दिया है। इन दोनों मेवाड़ी बहनों के वर्षीतप भी चल रहा है। माहेश्वरी परिवार की स्नेहलता मूंदड़ा ने ग्यारह और तेरह की तपस्या करके महान कार्य किया है। माहेश्वरी शिवजी एवं गायत्री देवी ने चार तेले की तपस्या करके विलक्षण कार्य किया है।

मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि तपस्या आत्मोदय का श्रेष्ठ आलंबन है तथा धर्मसंघ की प्रभावना का महत्त्वपूर्ण घटक है। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष महावीर चावत, मंत्री बाबूलालदक, विकेश कुमार दक, तेममं की मंडल की अध्यक्षा रेखा भटेवरा, मंत्री टीना चावत, दिलीप पोखरना, विकास पोखरना, श्रद्धा दुगड़, मंजु-चेतना पोखरना आदि ने तपस्वियों की प्रशंसा की। भावेश पोखरना की नौ दिन की तपस्या और पारसदेवी की आठ दिन की तपस्या ने सबको आह्लादित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने किया।

अहमदाबाद से समागत अदिति सेखानी ने मुनि मदन कुमार जी के दर्शन कर महिला मंडल एवं ज्ञानशाला का अवलोकन किया। अदिति सेखानी ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की तथा नारी शक्ति को उजागर किया। मुनि मदन कुमार जी ने तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम को श्रेष्ठ बताते हुए धर्मसंघ के विकास का मूलाधार बताया।

सूरत से समागत प्रवीण मेड़तवाल, भावेश हिरण, राहुल खोखावत एवं विशाल माडका ने मुनि मदन कुमार जी के दर्शन कर ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं का कंठस्थ ज्ञान एवं संगीत प्रस्तुति का श्रवण किया प्रवीण मेड़तवाल ने मुनि मदन कुमार जी के कर्तृत्व की सराहना की। तेरापंथी सभा ने सभी अतिथियों का साहित्य से सम्मान किया।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ हुआ। ध्यान आदि कक्षाओं में शिविरार्थियों को ध्यान, आसन, प्राणायाम, मुद्राएँ, कायोत्सर्ग आदि का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मुख्य प्रवचन में भी ध्यान विषयक पद्धतियों का विश्लेषण किया गया।

प्रथम दिवस पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ध्यान द्वारा परिस्थितियों से परे मन:स्थितियों पर नितांत काबू पाया जा सकता है। समस्याओं का समाधायक है—ध्यान। ध्यान तनावमुक्ति, संयम का महत्त्वपूर्ण आलंबन है।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने उपसंपदा के पाँच सूत्रों का विश्लेषण करते हुए कहा कि भावक्रिया, प्रतिक्रियाविरिति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण ये पाँच उपसंपदाएँ ध्यान की दिशा में सशक्त प्रस्थान है।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा मंगलाचरण के साथ हुआ। राकेश खटेड़, टीपीएफ, चेन्नई के अध्यक्ष ने ध्यान विषयक महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने ध्यान में प्रवेश हेतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

पालनपुर (वाव) निवासी, सूरत प्रवासी परेश किरितभाई पारिख के नूतन गृह प्रवेश संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, सुशील गुलगुलिया ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

परेश भाई व उनके पिताजी किरितभाई पारिख ने व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को वर्तमान समय में सुगम एवं उपयोगी बताया तथा सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

अहमदाबाद।

नवनीत नाहटा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विक्रम दुगड़, अपूर्व मोदी ने नमस्कार महामंत्र के मंगलमंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपादित करवाया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट की गई। परिवार की ओर से नवनीत नाहटा ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर सहमंत्री जय छाजेड़ की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक विक्रम दुगड़ ने किया।

नामकरण संस्कार

विजयनगर।

विमल मांडोत एवं सीमा मांडोत के सुपुत्र के नामकरण के कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस गोलछा एवं विकास बांठिया ने विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

इस अवसर पर संस्कारक दिनेश मरोठी ने परिवार के प्रति मंगलकामना एवं शुभकामना प्रेषित की। मांडोत परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेयुप के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, महावीर टेबा, मंत्री राकेश पोखरणा की उपस्थिति रही।

भूमि पूजन

गंगाशहर।

गंगाशहर नई लेन स्थित आचार्य महाप्रज्ञ सर्किल के पास में आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि के द्वारा उपासक कन्हैयालाल बोथरा, जैन संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़, धर्मचंद सामसुखा, देवेंद्र डागा, पीयूष लुणिया और भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ धार्मिक गीतिकाओं के संगान के साथ संपन्न करवाया।

इस अवसर पर टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, महामंत्री हिम्मत जैन, मुख्य न्यासी एम०सी० बरलोटा, टीपीएफ बीकानेर के अध्यक्ष मिलाप चोपड़ा आदि केंद्रीय एवं स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

गंगाशहर।

अंजना-धीरेंद्र बोथरा पुत्र भीखमचंद बोथरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेंद्र डागा, पीयूष लुणिया और भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर जुगराज बनोट, राजेंद्र सामसुखा, सुबोध डागा, विपिन बोथरा आदि पारिवारिक व तेयुप साथियों की उपस्थिति रही।

एरोली।

राजेंद्र चंडालिया के नूतन प्रतिष्ठान की रि-ओपनिंग जैन संस्कार विधि से संपन्न हुई। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। संस्कारक सुरेश मोटावत एवं संस्कारक देवेंद्र बोहरा ने मिलकर सभी जैन मंत्रों का उच्चारण कर प्रतिष्ठान का उद्घाटन संपन्न करवाया।

राजेंद्र चंडालिया ने दोनों संस्कारकों का आभार प्रकट किया।

✦ अपराध व नियमातिक्रमण का एक कारण है अज्ञान। ज्ञान का प्रदीप अनेक समस्याओं का समाधान है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

भक्तांमर कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

न्यू तेरापंथ भवन में १८ दिवसीय भक्तांबर कार्यशाला का समापन हुआ। निवर्तमान मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि कार्यशाला का संचालन मुनि जयेश कुमार जी द्वारा किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य लक्ष्य भक्तांबर स्तोत्र जो संस्कृत में है उसकी उच्चारण शुद्धि हो और इसका कंठस्थ ज्ञान हो। मुनिश्री ने एक-एक पद का शुद्ध उच्चारण सीखाकर उसके अर्थ का वाचन किया।

इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि सर्वप्रथम हम किसी भी मंत्र या स्तोत्र की साधना करें तो उसके प्रति आस्था का प्रबल भाव हो, मन में किंचित मात्र भी संदेह न हो।

यह कार्यशाला लोक से लोकोत्तर बनने, स्वयं से सिद्ध बनने की पाठशाला थी। हम भगवान आदिनाथ का प्रतिदिन मंगल स्मरण कर उनके गुणों को अपने भीतर आत्मसात करें। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म के मुख्य स्तोत्र में भक्तांबर का विशिष्ट स्थान है। हमें इसे कंठस्थ कर प्रतिदिन इसका संगान करना चाहिए।

कार्यशाला के प्रथम दिन मुनि भव्य कुमार जी ने किस प्रकार से भक्तांबर स्तोत्र की रचना हुई उसका विवेचन किया। कार्यशाला में लगभग ४५ श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, पूर्व तेयुप अध्यक्ष राजेश बाफना, निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष अरविंद सालेचा, जेटीएन प्रतिनिधि खुशाल ढेलड़िया के साथ तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक रिफ्रेशर कोर्स कार्यशाला

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ सभा के आयोजकत्व में 'ज्ञानशाला स्नातक प्रशिक्षक रिफ्रेशर कोर्स' एक दिवसीय कार्यशाला की शुरुआत प्रशिक्षिकाओं के मंगल संगान से हुई। इस अवसर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आगम निरयुक्ति साहित्य आदि के अवगाहन से एक सत्य वाक्य प्रेरणा बनकर निष्पंदित होकर निकलता है, वह है शाश्वत प्रकाश प्रदान करने वाला एकमात्र 'ज्ञान'। यह भीतर का अलौकिक ज्ञान विवेक चेतना जागृत करने वाला होता है। आध्यात्मिक ज्ञान सही पथ दिखलाता है।

ज्ञानशाला इस भौतिकता की पांख को नियंत्रित करने के लिए संयम की आँख प्रदान करती है। ज्ञानशाला से विवेक की आँख प्राप्त होती है। सफलता के तीन महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं—श्रद्धा, समर्पण और पराक्रम। विश्वास का प्रादुर्भाव व्यक्ति को लक्षित मंजिल हासिल कराता है।

हर प्रशिक्षक आत्मविश्वास के साथ स्वयं प्रशिक्षित बनें और ज्ञानशालार्थियों के ज्ञान विकास के प्रति भी पराक्रम होना चाहिए। समय-समय पर सभा, प्रशिक्षक, अभिभावक, व्यवस्थापक बच्चों को प्रोत्साहित भी करें। ज्ञानशाला संस्कारों की एक सुंदर फुलवारी है। जिसे जागरूकता के साथ फलवान बनाए रखने का प्रयास हो।

ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका अनिता चोपड़ा ने कहा कि ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका होने का हमें सात्त्विक गौरव है। सही सिंचन और सही वक्त का ज्ञानशाला के लिए नियोजित हमारा परम कर्तव्य है। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने कहा कि प्रशिक्षिकाएँ छोटे-छोटे टिप्स के द्वारा बच्चों में ज्ञान का संवर्धन करें।

सात सत्रों में विभाजित कार्यशाला में लगभग २५ ज्ञानशाला की ७० प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास, साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने तत्त्वदर्शन, साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने जीवन-विज्ञान, गेम्स, प्रोजेक्ट आदि का प्रशिक्षण दिया। टीपीएफ के अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने टेक्नोलोजिकल प्रशिक्षण दिया। स्नातक रेफ्रेशर कोर्स कार्यशाला में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी द्वारा तेरापंथ दर्शन का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर समस्त प्रशिक्षिकाओं ने आत्मिक आह्लाद की अनुभूति की।

कार्यशाला कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रभारी सुरेश तातेड़ ने किया।

विद्यार्थी शिक्षक सम्मेलन का आयोजन

छापर।

कालू-महाश्रमण समवसरण में अमेरिका प्रवास रतन मधुलिका बेद के सहयोग से विद्यार्थी शिक्षक सम्मेलन का आयोजन हुआ। अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में हुए कार्यक्रम में कस्बे के ३००० विद्यार्थियों व शिक्षकों ने भाग लिया। आचार्य महाश्रमण जी के सान्निध्य में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रदीप सुराणा ने की। जबकि रतनगढ़ विधायक अभिनेष महर्षि मुख्य अतिथि व अणुव्रत समिति के संरक्षक भानुकुमार नाहटा, मगनसिंह दुधोड़िया व नानगराम तापड़िया विशिष्ट अतिथि थे।

कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत महिला मंडल विंग की टीम ने गीतिका से की।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कहा कि मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्त्व है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान व अर्थ अर्जित करने का नहीं होना चाहिए। बल्कि शिक्षा का मूल उद्देश्य संस्कार निर्माण होना चाहिए। आचार्यश्री ने संस्कारयुक्त शिक्षा प्रणाली पर बल देते हुए कहा कि विद्यार्थियों में अहिंसा, नैतिकता, ईमानदारी, सद्भावना व नशामुक्ति के भाव विकसित करने चाहिए।

मुनि योगेश कुमार जी ने 'महान पुरुष कैसे बनें' विषय पर प्रेरणा दी। अणुव्रत प्रभारी मुनि मनन कुमार जी ने देश की भावी पीढ़ी को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षकों को सकारात्मक भूमिका निभाने की प्रेरणा दी। सम्मेलन को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक चैनरूप दायमा व समिति के पूर्व अध्यक्ष रेखाराम गौदारा ने भी संबोधित किया।

समिति अध्यक्ष सुराणा ने आचार्यप्रवर के प्रति अभिवंदना जताई तथा अतिथियों का आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर समिति के मदनलाल गोयल, बजरंग शर्मा, करमचंद नाई, विनोद नाहटा, शंकर सारस्वत, राकेश ढेनवाल, मंगेजाराम, बनवारी रतावा, शुभकरण प्रजापत, महिला विंग की सरोज भंसाली, कंचन मालू, शोभा डोसी, सपना बैद, सुमन भूतोड़िया, सज्जन दुधोड़िया, सुमन नाहटा व सरोज नाहटा सहित करीब एक दर्जन स्कूलों के विद्यार्थी व शिक्षक उपस्थित थे।

भक्तांमर का सामूहिक सजोड़े अनुष्ठान

उदासर।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में 'सजोड़े भक्तामर अनुष्ठान' का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में ४४ जोड़े उपस्थित थे एवं अन्य अनेकों भाई-बहनों ने अनुष्ठान में भाग लिया। साध्वी कांतप्रभा जी ने भक्तामर का महत्त्व बताकर पूरा उच्चारण सहित भक्तामर पाठ किया।

साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि भक्तामर का एक-एक श्लोक बहुत ही शक्तिशाली है। कई श्लोकों से शारीरिक एवं मानसिक व्याधि दूर हो जाती है। प्रतिदिन नियमित पाठ करने से अनेकों लोगों को रोग-मुक्ति में सहयोग मिला है।

साध्वी शीतलयशा जी एवं साध्वी रोहितप्रभा जी ने दाम्पत्य जीवन-सुखी जीवन बने, इसके उपाय बताए। सभा के अध्यक्ष हनुमानमल महनोत ने अपने भाव व्यक्त किए।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन, सूरत के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में त्रिदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें संभागियों को ध्यान, आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग आदि का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रस्तुत अद्वितीय एवं अनुपम प्रविधि है। प्रेक्षाध्यान द्वारा भाव धारा में परिवर्तन होता है। प्रेक्षाध्यान दूसरों की नहीं स्वयं की गलतियों को देखने की कला सिखाता है। यह आत्मा के द्वारा आत्मा का दर्शन करने की अद्भुत प्रक्रिया है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों को निरंतर करने की जरूरत है। उन्हें जीवनशैली का एक भाग बनाने की जरूरत है। मुनि अनंत कुमार जी ने जीवन विकास के विविध सूत्रों को विस्तार से समझाया।

कार्यक्रम की मुख्य संचालिका एवं प्रेक्षा फाउंडेशन स्थानीय संयोजिका अलका सांखला ने आसन, प्राणायाम एवं यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण दिया। संगीता भंसाली ने प्रेक्षाध्यान का सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया। निल्पा जैन ने ध्यान के एवं पुष्पा पोखरणा ने कायोत्सर्ग के प्रयोग करवाए। गौतम गादिया, प्रीति जैन, कमला भंसाली आदि ने प्रायोगिक प्रशिक्षण का निदर्शन किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक अर्जुन मेड़तवाल ने स्वरचित मुक्तकों द्वारा प्रेक्षाध्यान की महत्ता समझाई। रेणु बैद, श्वेता रामपुरिया आदि के निर्देशन में प्रशिक्षिका बहनों ने उल्लेखनीय श्रम किया।

अभिनव सामायिक कार्यक्रम का आयोजन

सवाई माधोपुर।

अणुव्रत भवन में तेरापंथी सभा व तेममं के संयुक्त तत्त्वावधान में मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में अभिनव सामायिक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि समता की साधना का नाम है—सामायिक। यह प्रतिकूल परिस्थिति में संतुलित रहने का संदेश देती है। सामायिक में श्रावक गृह कार्यों से सर्वथा उपरत हो जाता है। सामायिक अनुष्ठान सबमें अभिनव शक्ति का संचार कर रहा है।

मुनि देवार्यकुमार जी ने कहा कि सामायिक का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। सामायिक धर्म उपासना का वह विशिष्ट अनुष्ठान है, दर्पण है जिसमें अंतर्मुखी बनने वाला स्वयं के व्यवहारों को देख सकता है तथा उन्हें बदल सकता है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुशीला गोयल व विशिष्ट अतिथि राजेश गोयल, पूर्व उप-सभापति व रमा गोयल का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर ज्ञानशाला संचालन में विशिष्ट योगदान देने वाली प्रशिक्षिकाओं—सुनीता जैन, रश्मि जैन, सुमिता जैन, सिम्मी, सीमा जैन, सुमंगला जैन व अनिता जैन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री नरेंद्र जैन ने किया। पूर्व अध्यक्ष अनिल जैन वर्धमान ने अतिथियों का परिचय, रतनलाल जैन, आलनपुर सम्मान व अध्यक्ष धर्मराज जैन ने आभार ज्ञापित किया।

'भक्तांमर से असाध्य रोग का इलाज' कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

मुनि रश्मि कुमार जी, मुनि प्रियांशु कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में भक्तांमर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के उद्‌बोधन से हुई। मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि भक्तामंर से हमें कई तरह के लाभ मिल सकते हैं, इनकी साधना शक्ति को जागृत कर एक-एक श्लोक से कई असाध्य बीमारी को दूर किया जा सकता है।

मुनि प्रियांशु कुमार जी ने कहा कि आचार्य मानतुंग ने प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ देव की अनमोल स्मृतियों का ४८ गाथाओं का संस्कृत श्लोक में निर्माण किया जो आज के युग में अपने शारीरिक, मानसिक इलाज कर सकते हैं। सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी एवं मंजु गादिया ने नागपुर, महाराष्ट्र से पधारे डॉ० मंजु जैन एवं उनके साथ बैंगलुरु से पधारे राजकुमार जैन, सहारा बोरा एवं अन्य साथीगण का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक फतेहलाल उज्ज्वल कुमार सियाल परिवार, दिवेर के प्रति आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के अंत में मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि सभा के प्रयत्न एवं महिला मंडल के सहयोग से कार्यक्रम सफलतम रहा। कार्यक्रम में सभा उपाध्यक्ष सुरेश मांडोत, विनोद पारख, मनोहर बोहरा, सहमंत्री लाभेश कांसवा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत ने किया।

पर्युषण है आत्मा के निकट रहने का पर्व

सरदारपुरा, जोधपुर।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का प्रारंभ हुआ। प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस पर मंगलाचरण तेरापंथ समाज सरदारपुरा के वरिष्ठ श्रावकों द्वारा गीत के संगान से किया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि पर्युषण पर्व का आज से प्रारंभ हो रहा है। पर्युषण पर्व व्यक्ति की चेतना को झंकृत कर उपयोग अध्यात्ममुखी बनने वाला होता है। पर्युषण में हम अपनी आत्मा के निकट रहने का प्रयत्न करें। खाद्य संयम दिवस रसनेंद्रिय पर विजय की प्रेरणा देने वाला है। स्वास्थ्य को गौण कर स्वाद के लिए खाना अज्ञानता है।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने भगवान महावीर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए भगवान महावीर के २७ भवों का वर्णन प्रारंभ किया। कल्पसूत्र में व्याख्यातीत भवों का विवेचन करते हुए नयसर और मरीचि के भव का वर्णन किया। साध्वी भव्यप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान का प्रयोग कराया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी भव्यप्रभा जी द्वारा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वीश्री ने देव, मनुष्य, तिर्यंच और नरक गति बंधन के कारण बताए। तेमम, सरदारपुरा द्वारा गीत से मंगलाचरण किया गया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीत द्वारा स्वाध्याय दिवस का महत्त्व बताया। साध्वी करुणाप्रभा जी ने भगवान महावीर के तीसरे भव मरीचि के भव से अपना वक्तव्य प्रारंभ किया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि आज सभी धर्मावलंबी स्वाध्याय दिवस की आराधना कर रहे हैं। स्वाध्याय का केवल जैन धर्म में नहीं अपितु समस्त मानव जाति के लिए महत्त्व है। आत्म उत्थान और जीवन के उद्धार के लिए स्वाध्याय जरूरी है। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने किया।

वाणी संयम दिवस पर कन्या मंडल की कन्याओं ने मंगलाचरण किया। साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि महान दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी कहते थे कि वाणी का अनावश्यक प्रयोग हमारी शक्ति को क्षीण करता है। बोलते समय एक सूत्र को स्मृति में रखा जाए तो बोलना उपयोगी हो सकता है, वह सूत्र है–'क्लेश हो वैसा मत बोलो'।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने तीर्थंकर महावीर की जीवनी के अंतर्गत भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन किया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीतिका द्वारा मौन करने की प्रेरणा दी।

साध्वी भव्यप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का संचालन कनिका बाफना और याना सुराणा ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस का सरदारपुरा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी बच्चों द्वारा मनमोहक प्रस्तुति से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। दिल्ली से समागत संगायिका अभिलाषा बांठिया ने गीतिका का संगान किया। साध्वी जिनबाला जी ने अणुव्रतों के महत्त्व पर कहा कि हमें अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करना चाहिए। अनंत इच्छाएँ सुखमय-शांतिमय जीवन का अंत करने वाली होती हैं। अणुव्रत के नियम व्यक्ति की आवश्यकता पर नियंत्रण करने वाले नहीं, किंतु विलासपूर्ण जीवन पर नियंत्रण करने की प्रेरणा देता है। साध्वी करुणाप्रभा जी ने भगवान महावीर के पूर्व भवों का वर्णन किया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी भव्यप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान और महाप्राण ध्वनि के प्रयोग करवाए।

कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला से दीक्षा कोठारी और लब्धि बांठिया ने किया।

साध्वीश्री जी के सान्निध्य में जप दिवस का कार्यक्रम किशोर मंडल द्वारा मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि जप में किसी न किसी मंत्र का आलंबन लिया जाता है अर्थात् मनन करने पर जो त्राण देता है, वह मंत्र है। जप से विघ्न-बाधाएँ दूर होती हैं।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने भगवान महावीर के गर्भकाल, जन्मोत्सव, देवों द्वारा जलाभिषेक का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन ऋषभ लुंकड़ ने किया।

ध्यान दिवस पर तेयुप ने गीतिका का संगान कर कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि वर्तमान में आवेश, आवेग, उत्तेजना की जो समस्या है उसे बाह्य प्रभाव से नियंत्रण नहीं किया जा सकता। ध्यान के प्रयोगों द्वारा इन समस्याओं का चिर स्थायी परिवर्तन संभव है। साध्वी करुणाप्रभा जी ने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी महकप्रभा जी ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर साध्वी करुणाप्रभा जी ने बताया कि श्रावकों द्वारा ३ पंचरंगी हुई है। जिसमें ४५ व्यक्तियों ने उपवास से लेकर पाँच की तपस्या की। इसके अलावा काफी अठाई तप की तपस्या हुई।

तेयुप से निरंजन तातेड़ और नरेंद्र सेठिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पर्युषण महापर्व का अंतिम दिवस संवत्सरी पर्व पर तेयुप, किशोर मंडल ने गीतिका की संयुक्त प्रस्तुति से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। कन्या मंडल की बहनों ने गीतिका का संगान किया तथा नाटिका प्रस्तुत की।

साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर ने लगभग बारह वर्षों की ध्यान और तपस्यामय साधना के बाद चार घाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान का वरण किया और अनंतज्ञान के चक्षु खोल दिए।

सायंकालीन सत्र में सामूहिक सांवत्सरिक प्रतिक्रमण की आराधना हुई। श्रावक-श्राविका समाज ने पौषध की आराधना की।

पच्चीस बोल प्रतियोगिता का आयोजन

कानपुर।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में २५ बोल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी ने कहा कि जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म है और इस धर्म को समझने का प्रवेश द्वार २५ बोल होता है। साध्वीश्री जी ने बच्चों द्वारा तत्त्वज्ञान के प्रति श्रद्धा एवं उसे सीखने की ललक की सराहना करते हुए सभी को २५ बोल सीखने का आह्वान किया।

साध्वी दीप्तियशा जी ने रोचक ढंग से २५ बोल से संबंधित जानकारी दी तथा प्रतियोगिता कराई। प्रतियोगिता को कई सेक्शन में विभाजित करके प्रश्न पूछे तथा सभा में प्रतियोगियों के अतिरिक्त श्रोताओं से भी प्रश्न पूछे गए।

प्रतियोगिता में कानपुर तेरापंथी सभा की ओर से प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरित किए गए। प्रथम स्थान पर हिमांशु गिड़िया और लक्ष्य जम्मड़ रहे। द्वितीय स्थान पर प्रियंका भूतोड़िया और रिद्धिमा सुराणा रही। तृतीय स्थान पर राजू सुराणा और विनीता सेठिया रही। दिल्ली और कोलकाता से साध्वीश्री जी के दर्शनार्थ आए हुए श्रावकों ने भी प्रतियोगिता में भाग लिया।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला

बालोतरा।

तेरापंथ भवन में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा जयपुर व जोधपुर अंचल कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण के साथ शुभारंभ हुआ।

सभामंत्री महेंद्र वेद ने बताया कि सभी पदाधिकारियों का तिलक व जैन दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। महासभा संगठन मंत्री ने गीत का संगान किया और महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल ने सभी का स्वागत किया।

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि महासभा के अंतर्गत करीब ६२५ क्षेत्रों पर तेरापंथी सभा का संचालन हो रहा है व महासभा उन सभी की सार-संभाल करती है तथा उनके द्वारा आध्यात्मिक व सामाजिक कार्य करने का मार्गदर्शन करती है, जिससे संघ व देश की प्रभावना बढ़ती है।

महामंत्री विनोद बैद ने अपने वक्तव्य में समाज की नीतियों व कार्यशैली की बात कही और संघ विकास की सुदृढ़ता की बात बताई।

उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने सभा के एकाउंट व डॉक्यूमेंट मैनेजमेंट रखने और कार्य करने की व्यवस्था व इनकम टैक्स बेनिफिट तथा व्यवस्थित कार्य करने की जानकारियाँ दी।

महासभा संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया ने संस्था के संगठनात्मक कार्यों की जानकारी दी। कार्यशाला में महासभा पंचमंडल सदस्य दिलीप सिंघवी ने भी अपने विचार रखे। लगभग २० क्षेत्रों के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। आभार विजयराज मेहता द्वारा किया एवं संचालन महासभा मंत्री विनोद बैद ने किया।

कार्यशाला के बाद महासभा पदाधिकारियों द्वारा पुस्तकालय व सभा तेयुप, महिला मंडल ऑफिस का अवलोकन किया।

एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी एवं मुनि जितेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में नैतिकता का शक्तिपीठ पर स्थित आशीर्वाद भवन में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा आयोजित इस शिविर में १२० से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया। सर्वप्रथम प्रातः योग आसन से शिविर की शुरुआत हुई। तत्पश्चात श्वासप्रेक्षा, कायोत्सर्ग, मंत्र प्रेक्षा, सहिष्णुता, स्वास्थ्य अनुप्रेक्षा सहित विभिन्न प्रयोग प्रशिक्षकों द्वारा कराए गए।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि ध्यान का मूल लक्ष्य आत्मशुद्धि होना चाहिए। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरती, मैत्री, मिताहार, मितभाषण ये पाँच प्रेक्षाध्यान के ध्येय सूत्र हैं। प्रेक्षाध्यान मानव जाति के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की एक बहुत बड़ी देन है। ध्यान के द्वारा हमारी इंद्रियों का संयम हो और अप्रमत्तता बढ़े, यह आवश्यक है।

सभा मंत्री रतन छल्लाणी ने बताया कि इस शिविर में मुख्य प्रशिक्षक मीना साबद्रा एवं सहयोगी धीरेंद्र बोथरा ने ध्यान के विविध प्रयोग करवाए। शिविर के संचालन में तेरापंथी सभा एवं तेयुप, गंगाशहर के सदस्यों का योगदान रहा।

सामूहिक एकासन तप का आयोजन

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेमम के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से सामूहिक एकासन तप का आयोजन किया गया। लगभग ७० भाई-बहन एकासन के इस उपक्रम से जुड़े। अनेकों भाई-बहन नवरात्रि के अनुष्ठान में संभागी बने। एकासन कार्यक्रम की संयोजिका उषा धोका का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की संयोजना में महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी, संरक्षिका कमला गेलड़ा, सहमंत्री कंचन भंडारी, कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर, प्रचार-प्रसार मंत्री रानी मांडोत, कार्यसमिति सदस्य सरोज चिप्पड़, सूरज बोथरा, लाडदेवी चोरड़िया आदि सदस्यों का योगदान रहा।

✦ *वाणी का असंयम व्यक्ति के व्यक्तित्व को बौना बनाने वाला होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

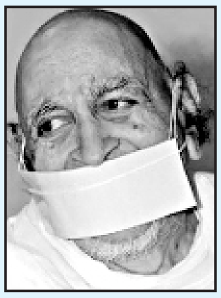

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

स्वयं सत्य खोजें

एक व्यक्ति अपनी पत्नी के सामने शेखी बघारता हुआ बोला–'आज मैंने तीन का उपकार किया है।' पत्नी द्वारा इसका विवरण पूछे जाने पर वह बोला–'आज प्रातः मैंने एक हलवाई से मिठाई खरीदी। उसे पैसा मिला, उसका उपकार हो गया। रास्ते में मुझे एक भिखमंगा मिला। थोड़ी मिठाई उसे दी। उसका उपकार हो गया। मेरा रुपया नकली था, उससे मुझे छुट्टी मिल गई। यह मेरा उपकार हो गया।' इस प्रकार झूठी शेखी बघारने वाले बहुत लोग होते हैं। इस संदर्भ में श्रद्धेय गुरुदेव कालूगणी एक कहानी सुनाया करते–

किसी गाँव में एक वणिक रहता था। बातों का बादशाह था वह, किंतु था कायर। चूहों की खट-खट से डरता था, पर बातें करता था शेर के साथ मुकाबला करने की। अपने गाँव से प्रतिदिन छोटे-छोटे देहातों में जाता और सूर्यास्त के बाद वापस लौट आता। उसके घर लौटने में प्रायः विलंब हो जाता था। पत्नी पूछती–'आप इतनी देर से क्यों आते हैं?' वह कहता–'तू घर पर बैठी रहती है। तुझे क्या पता? बाहर बस्ती में कितना कष्ट होता है, तू क्या जाने? देहातों से घर आता हूँ तो रास्ते में चोर मिल जाते हैं। उनसे मुकाबला करना पड़ता है। अन्यथा वे देखते-देखते फकीर बना देते हैं।'

पत्नी अपने पति के स्वभाव से परिचित थी। वह जानती थी कि ये शेखी बघारते हैं, इसलिए उसने एक दिन परीक्षा करने का निर्णय लिया। उस दिन वह बोली–'घर में जरूरी काम है। आप जल्दी पहुँच जाना।' वणिक बोला–'मैं कोशिश करूँगा।'

वणिक की पतनी ने पुरुष का वेश बनाया। हाथ में तलवार ली और पति के रास्ते में जाकर एक वृक्ष की ओट में बैठ गई। उस दिन वह अधिक विलंब से आया था। सूर्य अस्त हो चुका था। थोड़ा-थोड़ा अंधेरा भी घिर गया। वणिक उस स्थान के निकट पहुँचा और वह ओट से बाहर आकर खड़ी हो गई। ऊँचे स्वर में वणिक को संबोधित कर वह बोली–'वणिया! ओ वणिया! किधर जा रहा है?' ये शब्द सुनते ही वणिक को कँपकँपी छूट गई। पत्नी फिर बोली–'हाथ में जो थैला है, उसे चुपचाप मेरे सामने रख दे और बैठ जा यहाँ। एक घंटा तक यहाँ से हिलना मत।' वणिक तो कुछ बोल ही नहीं सका। उसने चुपचाप थैला आगे कर दिया। वणिक की पत्नी ने थैला हाथ में लिया और जाते-जाते उसके मुँह पर एक चाँटा जड़ दिया।

पत्नी थैला लेकर घर पहुँच गई और पुनः अपना वेश बदल लिया। वह जानती थी कि आज तो वे देर से आएँगे अतः निश्चिंत होकर सो गई।

रात के बारह बजे वणिक ने आकर दरवाजा खटखटाया। पत्नी ने दरवाजा खोला और उसे उपालंभ देते हुए कहा–'कितनी बार कहा था आपको कि आज घर पर कात है इसलिए जल्दी लौट आना। किंतु आप तो बारह बजाकर आए हैं।' वणिक बोला–'तुझे क्या बताऊँ, आज पूरे पचीस चोर मिल गए। उन सबसे बचकर आना कितना कठिन था। किसी को हाथों से धकेला, किसी को पाँवों से रौंदा, किसी को ललकारा और किसी को दुत्कारा। सच मानो आज तो तेरा सुहाग रहना था, इसलिए सही सलामत घर आ गया, पर मुकाबले में एक थैला चला गया, उसका अफसोस है।'

पत्नी झुंझलाती हुई बोली–'भले आदमी! क्यों झूठ बोलते हो? कहाँ से आए थे पचीस चोर? मुझे भी तो दिखाओ।' वणिक बोला–'तू उन्हें देखते ही बेहोश हो जाएगी।' पत्नी मुसकुराती हुई भीतर गई और थैला उसके सामने रखकर बोली–'क्यों शेखी बघारते हो? वे पचीस चोर तो मैं ही थी।' वणिक को काटो तो खून नहीं। अब वह सहमता हुआ बोला–'आहे! अब समझ में आया कि यह सब तेरा मायाजाल था। जब मेरे मुँह पर चाँटा पड़ा तभी मैं समझ गया कि ऐसे हाथ किसी आदमी के नहीं हो सकते। तो वे कोमल-कोमल हाथ तेरे ही थे।' पत्नी खिलखिलाकर हँस पड़ी। उस दिन के बाद वणिक ने बातें बनानी छोड़ दी।

शिविर-साधक इस बात को गंभीरता से लें कि केवल बातें बनाने या शेखी बघारने से काम नहीं होगा। साधना के लिए संपूर्ण भाव से समर्पित होकर प्रयोग करने से ही कुछ परिणाम आएगा और सत्य का साक्षात्कार होगा।

महावीर की ध्यान-मुद्रा

भगवान महावीर ध्यान के सचेतक प्रयोक्ता थे। उन्होंने अपने जीवन के हर पल को ध्यानमय बना लिया। उसकी ध्यान-साधना में किसी मुद्रा या प्रक्रिया विशेष को लेकर कोई प्रतिबद्धता नहीं थी। अर्हत की स्थिति तक पहुँचने से पूर्व वे जिन क्षणों में गहरे उतरे, वही उनकी ध्यान-मुद्रा बन गई।

भगवती सूत्र के तीसरे दशक (३/२/१०५) में भगवान महावीर की एक ऐतिहासिक ध्यान-मुद्रा निरूपित है। उसका निरूपण स्वयं भगवान महावीर ने अपने प्रथम शिष्य गणधर गौतम को संबोधित कर किया है। वे भगवान के बोल हैं–

'तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्का-रसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसंडे उज्जाणे जेणेव असोगपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलवट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि, दो वि पाए साहट्ट वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसणयणे ईसिपल्भारगएणं काएणं अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, संव्विदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उपसंपज्जेत्ता णं विहरामि।'

'गौतम! उस समय मैं छद्मस्थकालिक दीक्षापर्याय के ग्यारहवें वर्ष में था और निरंतर दो-दो दिन के उपवास की तपस्या, संयम और अन्य तपोयोग द्वारा आत्मा को भावित करता हुआ अनुक्रम से परिव्रजन कर रहा था।

एक गाँव से दूसरे गाँव में व्रज्या करता हुआ मैं शुंशुमारपुर नगर में पहुँचा। वहाँ मैं अशोकवन उद्यान में अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वीशिला-पट्ट पर तीन दिन का उपवास (तेला) स्वीकार कर अवस्थित हो गया। उस क्रम में मैंने एक रात की महा-प्रतिमा स्वीकार की। उस समय मैं ध्यानस्थ था।

ध्यानावस्था में मेरे दोनों पाँव परस्पर सटे हुए थे। दोनों भुजाएँ प्रलंबित थीं। दृष्टि एक पुद्गल पर टिकी हुई थी। नयन अभिमिष थे। शरीर थोड़ा आगे की ओर झुका हुआ था। अवयव स्थिर थे और इंद्रियाँ संयत थीं।'

इस ध्यान-मुद्रा के द्वारा शरीर, मन और श्वास तीनों साथ-साथ सध जाते हैं। भगवान महावीर की यह ध्यान-मुद्रा ध्यान की अग्रिम-भूमिका पर आरोहण करने के लिए एक प्रशस्त आलंबन बन सकती है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१०१)

बरस रही रसधार व्योम से अँखुआया भू पर उल्लास।
हर आंगन में हर देहरी पर आज छा रहा नया उजास।।

हिंसा की उत्कट ज्वाला से झुलस रहा सारा संसार
नफरत की मादक हाला से मूर्च्छित है सद्भाव उदार
तोड़ सरहदें मानवता की उग्रवाद पाता विस्तार
भय तनाव दहशत कुंठाएँ सदी बीसवीं का उपहार
ज्योति अहिंसा की द्योतित कर रच दो अब नूतन इतिहास।।

घुला हुआ विष आज हवा में जीवन की आशा धूमिल
भीतर गहराता अंधियारा ऊपर-ऊपर से झिलमिल
ठहर गई हैं राहें थककर मंजिल का अनुमान नहीं
पिघल रही हर साध मोम-सी सम्मुख स्वर्ण विहान नहीं
सुधा जहर को गीत पीर को धोखे को कर दो विश्वास।।

आँसू बहा रहे पत्थर भी देख देश के ये हालात
उजड़ी युग जीवन की बगिया पर न कहीं भी है बरसात
लौट रही बेरंग मनुज के ख्वाबों की सुंदर बारात
भक्षक आज बने हैं रक्षक आग उगलते हैं जलजात
घर-घर में उत्सव उतरेगा दो जन-जन को यह आश्वास।।

आज पुण्य अभिषेक दिवस है उदित हुआ है उजला प्रात
पावन हृदय रूप हिमगिरि से बहकर आया विमल प्रपात
है कर्तृत्व विलक्षण जीवन शरद चाँदनी-सा अवदात
नित प्रणम्य हो तुम अगम्य हो रम्य सदा रहते दिन-रात
रहो उगाते नए चाँद तुम व्यापक है गण का आकाश।।

(१०२)

जो ऊर्जा है मेरे भीतर
उसकी अब पहचान कराओ।
अथ इति का भूगोल बदलकर
आत्मशक्ति का भान कराओ।।

फसल उगी खुशियों की घर-घर
दिग्दिगन्त फैली सुवास है
देख अनुत्तर कार्य तुम्हारे
जगी सभी में नई आस है
निज उजास से हर मंदिर में
तुम अविनश्वर दीप जलाओ।।

तुम चिन्मय हो ज्योतिर्मय हो
युग का तमस तुम्हें धोना है
तुम विराट हो करुणामय हो
यह जग तो सचमुच बौना है
अवगुण्ठन हो दूर मोह का
ऐसा शुभ संदेश सुनाओ।।

सूर्य सदा करता रहता है
उजली किरणों से अभिनंदन
चाँद-सितारे सहज प्रणत हैं
कुदरत के कण-कण में स्पंदन
अंतरिक्ष झुकता चरणों में
क्या है इसका राज बताओ।।

जीवन-दर्शन युग दर्शन है
उससे प्रवर प्रेरणा पाएँ
मिले पीढ़ियों को आश्वासन
कुछ ऐसा करके दिखलाएँ
दीर्घ दिव्य जीवन पाकर तुम
गण-गौरव को शिखर चढ़ाओ।।

(क्रमशः)

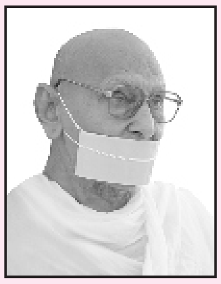

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४१) द्वादशमासपर्याय, आत्मध्यानरतो यतिः।
अनुत्तरोपपातिक-तेजोलेश्यां व्यतिव्रजेत्।।

बारह मास का दीक्षित आत्म-लीन मुनि पाँच अनुत्तर विमान के देवों के सुखों को लाँघ जाता है।

आत्मिक सुख की तुलना में पौद्गलिक सुख निकृष्ट होता है। पौद्गलिक सुख भी सबमें समान नहीं होता। मनुष्यों की अपेक्षा देवताओं का पौद्गलिक सुख विशिष्ट होता है। देवताओं की चार श्रेणियाँ हैं–

(१) व्यंतर, (२) भवनपति, (३) ज्योतिषी और (४) वैमानिक।

व्यंतर देव आठ प्रकार के होते हैं–

पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग और गंधर्व।

भवपति देव दस प्रकार के होते हैं–

असुरकुमार, नागकुमार, तडितकुमार, सुपर्णकुमार, वह्निकुमार, अनिल कुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

ये देव भवनों–आवासों में रहते हैं, अतः इन्हें भवनपति देव कहा गया है।

ये देव कुमार के समान सुंदर, कोमल और ललित होते हैं। ये क्रीड़ा-परायण और तीव्र रागवाले होते हैं।

ज्योतिषी देव पाँच प्रकार के होते हैं–

चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारक।

वैमानिक देव–

इनके दो भेद हैं–कल्पोपपन्न और कल्पातीत। कल्पोपपन्न वैमानिक देव बारह प्रकार के हैं। इनके नाम क्रमशः उनतीसवें श्लोक से बत्तीसवें श्लोक तक दिए गए हैं।

ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानवासी देव कल्पातीत होते हैं। ग्रैवेयक देवों के नौ और अनुत्तर देवों के पाँच भेद हैं।

आत्मिक सुख की तुलना पौद्गलिक सुखों से नहीं की जा सकती; क्योंकि वे क्षणिक, अशाश्वत और बाह्य-वस्तु सापेक्ष होते हैं। पौद्गलिक सुख में भी तरतमता होती है। साधारण मनुष्य और असाधारण मनुष्य में विभेद देखा जाता है। देव-सुखों की तुलना में मनुष्य के सुख तुच्छ हैं। देवताओं में भी सर्वार्थसिद्ध देवों के सुख सामान्य देवताओं के सुखों से अनंतगुण अधिक हैं। लेकिन आत्मिक सुख की तुलना में सर्वार्थसिद्ध देवों के सुख भी अकिंचित्कर हैं।

इन श्लोकों को प्रतिपाद्य यही है कि साधना ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती है, मुनि के आनंद का भी उत्कर्ष होता जाता है। वास्तव में आत्मानंद की तुलना किसी पौद्गलिक पदार्थ से प्राप्त सुख या आनंद से नहीं की जा सकती, किंतु सामान्य बोध के लिए उसकी यह तुलना की गई है।

(४२) ततः शुक्लः शुक्लजातिः, शुक्ललेश्यामधिष्ठितः।
केवली परमानंदः, सिद्धो बुद्धो विमुच्यते।।

उसके बाद वह शुक्ल और शुक्लजाति वाला मुनि शुक्ल लेश्या को प्राप्त होकर केवली होता है, परम आनंद में मग्न, सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न १६ : क्या बिना किसी संभोग के गर्भ रह सकता है?

उत्तर : शिशु की उत्पत्ति के लिए पुरुष व स्त्री दोनों का संयोग अपेक्षित रहता है। केवल पुरुष के 'वीर्य' या स्त्री के 'रज' से शिशु की उत्पत्ति नहीं होती, अपितु दोनों के सम्मिश्रण से होती है। पुरुष के वीर्य व स्त्री के रज का बिना संयोग के भी यदि गर्भ में सम्मिश्रण हो जाता है तो उससे भी शिशु की उत्पत्ति हो सकती है, जैसे–परखनली शिशु। बिना किसी संयोग के गर्भ तो नहीं रहता, पर गर्भ जैसा मांसपिंड गर्भाशय में बढ़ सकता है। गर्भ की भाँति इसमें भी 'मासिक' रुक जाता है, किंतु उसमें पंचेन्द्रिय जीव उत्पन्न नहीं होता।

प्रश्न १७ : ब्रह्मचर्य का पालन कौन सा भाव, कौन सी आत्मा?

उत्तर : केवल ब्रह्मचर्य का पालन भाव दो–क्षायोपशमिक, पारिणामिक; आत्मा-योग त्यागयुक्त ब्रह्मचर्य का पालन भाव-चार-उदय को छोड़कर आत्मा एक-योग व चारित्र (देश चारित्र)।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण

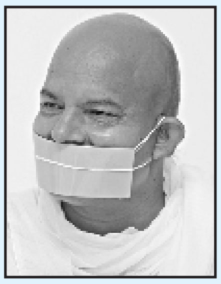

आचार्य भिक्षु

दान-दया के विषय में लौकिक एवं लोकोत्तर भेद रेखा प्रस्तुत कर आचार्य भिक्षु ने जैन समाज में प्रचलित मान्यता के समक्ष नया चिंतन प्रस्तुत किया। उस समय सामाजिक सम्मान का मापदंड दान-दया पर अवलंबित था। स्वर्गोपलब्धि और पुण्योपलब्धि की मान्यताएँ भी दान-दया के साथ जुड़ी हुई थीं। आचार्य भिक्षु ने लौकिक दान-दया की व्यवस्था को कर्तव्य व सहयोग बताकर मौलिक सत्य का उद्घाटन किया। साध्य-साधन के विषय में भी उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था। उनके अभिमत से शुद्ध साधन के द्वारा ही शुद्ध साध्य की प्राप्ति संभव है। उन्होंने कहा–रक्त से सना वस्त्र कभी रक्त से शुद्ध नहीं होता वैसे ही हिंसा प्रधान प्रवृत्ति कभी अध्यात्म के पावन लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकती।'

आचार्य भिक्षु एक कुशल विधिवेत्ता होने के साथ-साथ एक सहज कवि और महान् साहित्यकार थे। उन्होंने राजस्थानी भाषा में लगभग अड़तीस हजार पद्यों की रचना कर जैन साहित्य को समृद्ध किया। आचार्य भिक्षु की साहित्य-रचना का प्रमुख विषय शुद्ध आचार का प्रतिपादन, तत्त्वदर्शन का विश्लेषण एवं धर्मसंघ की मौलिक मर्यादाओं का निरूपण था। उनकी रचनाओं में प्राचीन वैराग्यमय आख्यान भी निबद्ध हैं। उनके द्वारा रचे गए पद्यों में रस, अनुप्रास और अलंकारों के प्रयोग पाठक को मुग्ध कर देते हैं। आचार्य भिक्षु के साहित्य को पढ़कर आधुनिक विद्वान् उन्हें हेगल और काण्ट की तुला से तौलते हैं।

आचार्य भिक्षु जब तक जिए, ज्योति बनकर जिए। उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है।

आचार्य भिक्षु के शासनकाल में उनचास साधु और छप्पन साध्वियाँ दीक्षित हुईं। वि०सं० १८६० भाद्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन सिरियारी (मारवाड़) में उन्होंने समाधि-मरण प्राप्त किया। उस समय उनकी आयु सतहत्तर वर्ष की थी।

आचार्य भारमलजी

तेरापंथ के द्वितीय आचार्य भारमलजी का जन्म वि०सं० १८०३ में मुहाँ ग्राम (मेवाड़) में ओसवाल वंश के लोढ़ा परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम किशनोजी तथा माता का नाम धारिणी था। दस वर्ष की लघु वय में उन्होंने स्थानकवासी संप्रदाय में मुनि भीखणजी (आचार्य भिक्षु) के हाथ से दीक्षा ग्रहण की। वे बचपन से ही सहज, सरल एवं विनीत होने के साथ-साथ सत्य के महान् पक्षधर थे। आचार्य भीखणजी जब विचार-भेद के कारण स्थानकवासी संप्रदाय से अलग हुए तब भारमलजी स्वामी ने उनका अनुगमन किया। आचार्य भीखणजी के शिष्यों में मुनि भारमलजी उनके परम भक्त और प्रमुख शिष्य थे। आचार्य भिक्षु के आदेश को वे जीवन से भी अधिक मूल्य देते थे।

मुनि भारमलजी स्थिरयोगी, प्रज्ञावान् और सतत श्रमशील थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा आचार्य भिक्षु की सन्निधि में ही हुई। थोड़े ही समय में सहस्रों गाथाओं को कंठस्थ कर उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। स्वाध्याय में उनकी विशेष रुचि थी। अनेक बार सायंकालीन प्रतिक्रमण के बाद एक प्रहर रात्रि तक वे खड़े-खड़े उत्तराध्ययन सूत्र की दो हजार गाथाओं का स्वाध्याय कर लेते। वे लिपिकला में बहुत दक्ष थे। उनके अक्षर सुघड़ और सुडौल थे। उन्होंने स्वामीजी द्वारा रचित प्रायः सभी ग्रंथों की प्रतिलिपि की। आज भी उनकी वे प्रतियाँ स्वामीजी के ग्रंथों की प्रामाणिक प्रतियों के रूप में मान्य हैं। आचार्य भिक्षु जो रचना करते, शिक्षा देते, लेख व मर्यादा बनाते, भारमलजी स्वामी उन्हें लिपिबद्ध कर स्थायित्व देते जाते। उन्होंने अपने जीवन में लगभग पाँच लाख गाथाओं का लेखन किया।

भारमलजी स्वामी का जीवन आचार्य भिक्षु की प्रयोगशाला था। स्वामी जी संघ में कोई भी नियम लागू करना चाहते तो उसका प्रथम प्रयोग भारमलजी पर ही करते। इसका परिणाम यह होता कि दूसरे साधुओं पर स्वयं उसका असर पड़ता।

(क्रमशः)

✦ वाणी में विष और अमृत दोनों हैं। सत्य, मधुर व हितकर वाणी अमृत होती है और मिथ्या, कटु व अहितकर वाणी विष होती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

पर्युषण महापर्व का आयोजन

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में मनाया गया। इस विशिष्ट नवाह्निक पर्वाराधना का आगाज अष्टदिवसीय अखंड जपानुष्ठान से हुआ।

महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। सभाध्यक्ष छतर सेठिया, तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, तेममं मंत्री सीमा छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने पर्युषण का महत्त्व बताया। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि यह पर्व आत्मोत्थान एवं चित्त शुद्धि का पर्व है। खान-पान के संयम द्वारा हम अपने आरोग्य का संवर्धन कर सकते हैं। साध्वी अमितरेखा जी ने कालचक्र को विस्तार से बताते हुए भगवान ऋषभ के पूर्वजन्म की चर्चा की। संचालन सभा के मंत्री हेमराज सेठिया ने किया।

स्वाध्याय दिवस का शुभारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के स्मरण से किया। सुमधुर गायक मनीष पगारिया द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने स्वाध्याय का महत्त्व बताया। स्वाध्याय निर्जरा का एक आंतरिक भेद है। शासनश्री शिवमाला जी ने कहा कि स्वाध्याय के लिए मन की एकाग्रता जरूरी है, जो नित्य स्वाध्यायशील होते हैं, दुखों को दूर करने वाले होते हैं। स्वाध्याय के द्वारा बड़ी से बड़ी समस्या से पार पाया जा सकता है।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि जिसमें अपने हित की जानकारी मिले, प्रेरणा मिले उस पठन-पाठन को स्वाध्याय कहते हैं। भाई-बहनों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में आयोजित अभिनव सामायिक कार्यक्रम में कुल ३०० सामायिक हुई। कार्यक्रम की शुरुआत तुलसी संगीत सुधा के सदस्यों द्वारा गीतिका के संगान से हुई। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने श्रावक समाज का स्वागत किया। साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि भारत की अध्यातम प्रधान परंपरा में सभी धर्मों का सार है संतुलित जीवनशैली। वह समता से प्राप्त होती है। उसका प्रायोगात्मक अनुष्ठान है—सामायिक। परिषद मंत्री विपुल पितलिया ने विचार रखे। अभातेयुप राष्ट्रीय सामायिक सहप्रभारी राकेश दक, तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष छतर सिंह सेठिया, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक गणेशमल कंचन देवी नाहर परिवार थे। कार्यक्रम का संचालन सामायिक प्रभारी सौरभ चौरड़िया ने किया।

वाणी संयम दिवस का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के स्मरण के साथ किया। प्रेक्षा संगीत सुधा ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित गीत द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने वाणी संयम का महत्त्व बताया। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि वाणी में बहुत शक्ति होती है, उसका सदुपयोग आवश्यक है, जो सोच-समझ करके बोलता है उसे कभी आगे सोचना नहीं पड़ता है। वाणी चुंबक के समान है एक-दूसरे को खिंचती है, यह एक बहुत बड़ा रसायन है जो एक-दूसरे को जोड़ता है। साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि दस आश्चर्य में एक आश्चर्य है भगवान मल्लिनाथ का स्त्री तीर्थंकर होना, पूर्वजन्म का विवेचन करते हुए भगवान मल्लिनाथ के जीवन पर प्रकाश डाला। संचालन सभा के सहमंत्री गुलाब बांठिया ने किया।

साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में जप दिवस का कार्यक्रम साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए। साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि जप एक बहुत औषधि है, जो अंदर के रसायन को बदलती है। जप आध्यात्मिक स्नान है, जो स्फूर्ति और ताजगी देता है।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि जप करते समय धरती पर बिना आसन नहीं बैठना चाहिए। उत्तम आसन ऊन का होता है। संचालन सभा के सदस्य नरेश बांठिया ने किया।

साध्वीश्री जी के सान्निध्य में ध्यान दिवस का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेयुप विजयनगर एवं हनुमंतनगर के युवकों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी अर्हम् प्रभा जी ने ध्यान पर विचार व्यक्त किए। साध्वी रत्नप्रभा जी ने ध्यान के प्रयोग करवाए।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि योग का निरोध करना ध्यान है। आचार्यश्री तुलसी के शब्दों में मन की रिक्तता ही ध्यान है। ध्यान वो धन है जिसे अपनाकर व्यक्ति तृप्ति का अनुभव करता है। साध्वी अमितरेखा जी ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष छतरसिंह सेठिया ने क्षेत्र में चल रहे जपानुष्ठान की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सभा के सहमंत्री गुलाब बांठिया ने किया।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में मैत्री पर्व का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के स्मरण के साथ किया। साध्वीश्री ने कहा कि संवत्सरी पर्व जैन धर्म का एक महापर्व है, इस पर्व पर सभी जैन चौविहार उपवास करते हैं। साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के पूर्व भव का वाचन किया। साध्वी अमितरेखा जी ने भगवान महावीर एवं तेरापंथ के सभी ११ आचार्य के जीवन का वाचन किया। १८० भाई-बहनों ने पौषध का प्रत्याख्यान किया। सभाध्यक्ष छतरसिंह सेठिया ने उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत करते हुए खमतखामणा की। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा, तेममं मंत्री सीमा छाजेड़, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा ने साध्वी शिवमाला जी एवं संपूर्ण श्रावक समाज से क्षमायाचना की। संपूर्ण श्रावक समाज ने परमपूज्य गुरुदेव को वंदन करते हुए क्षमायाचना की। तत्पश्चात चारों साध्वीवृंद से क्षमायाचना की। दिनेश मरोठी ने सामूहिक खमतखामणा करवाया। साध्वीवृंद ने संपूर्ण श्रावक समाज से खमतखामणा किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के उपाध्यक्ष विक्रम मेहर ने किया।

शांतिपूर्ण जीवन की प्राप्ति का सर्वसुलभ उपक्रम है प्रेक्षाध्यान

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में प्रेक्षा दिवस का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की २० वर्ष की सुदीर्घ साधना का सुफल है। प्रेक्षाध्यान द्वारा पूर्व कृत कर्मों की निर्जरा होती है। साथ ही व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक विकास भी होता है।

डॉ० माया बहन ने दीर्घ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने मंगलभावना करवाई। प्रेक्षाध्यान के विकास में विशेष योगदान के लिए डॉ० माया बेन एवं चेतना बेन का सम्मान किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रारंभ में प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षिकाएँ अलका सांखला एवं रेणु बैद द्वारा किया गया।

✦ *पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव

कांकरोली।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में कांकरोली तेरापंथ सभा की ओर से 'कांकरोली ज्ञानशाला' का वार्षिक उत्सव उत्साह के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, आंचलिक संयोजक मुकेश कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी बाबूलाल इंटोदिया, विकास मादरेचा, सुनील मारू आदि कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। तेयुप अध्यक्ष, तेममं अध्यक्षा भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के बच्चों ने नमस्कार महामंत्र से किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत का संगान किया। साध्वी मंजुयशा ने कहा कि ज्ञानशाला एक आध्यात्मिक ज्ञान एवं संस्कारों के शिलान्यास का सुंदर मंदिर है। जिसके माध्यम से बच्चों को जैन दर्शन, तत्त्वदर्शन एवं तेरापंथ दर्शन के ज्ञान के साथ-साथ बच्चों के सही जीवन निर्माण हो इसके लिए व्यवहारिक ज्ञान के संस्कार भी दिए जाते हैं। साध्वीश्री जी ने कहा कि संसार वाटिका का सुंदर फल है—बालक। बालक का जीवन बहुत ही सहज, सरल एवं पवित्र होता है। वह कोरे कागज एवं मिट्टी के ढेले के समान होता है। उसे कोई योग्य चित्रकार या योग्य कुंभकार का योग मिल जाता है तो उसके जीवन का सही निर्माण हो जाता है, तो एक सुंदर पौधा बनकर भविष्य में फलदार वृक्ष भी बन जाता है।

ज्ञानशाला एक ऐसा उपक्रम है, जिसके द्वारा अच्छे जीवन का निर्माण होता है। साध्वीश्री ने सभी अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने की सद्प्रेरणा देते हुए एक गीत प्रस्तुत करके सभी को भावविभोर कर दिया।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। पदमचंद पटावरी ने ज्ञानशाला की शुरुआत कैसे हुई, क्यों हुई इसके बारे में जानकारी दी। अन्य पदाधिकारियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं को तेरापंथ सभा द्वारा सम्मानित किया गया। कई बच्चों को राष्ट्रीय ज्ञानशाला में श्रेष्ठ ज्ञानार्थी उत्तम ज्ञानशाला, शिशु संस्कार बोध में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया एवं कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित अतिथियों का भी सभा की ओर से पचरंगी पट्टी एवं मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया।

अंत में ज्ञानशाला प्रभारी बाबूलाल इंटोदिया ने तेरापंथ सभा एवं सभी के प्रति आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित की। मंगलाचरण से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सामूहिक ज्ञानशाला कार्यक्रम

साउथ हावड़ा।

सामूहिक ज्ञानशाला कार्यक्रम का शुभारंभ मालचंद भंसाली ने नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। बच्चों ने ज्ञानशाला गीत का संगान किया। ज्ञानार्थियों को नए-नए ज्ञानवर्धक गेम्स खिलाए गए।

बच्चों ने विभिन विषयों पर सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। ज्ञानार्थियों ने ग्यारह आचार्यों के जीवन की मनमोहक झाँकी को नए ढंग से प्रस्तुत किया।

ज्ञानार्थियों को लोकप्रिय संगानों पर आधारित हाउजी का भी आयोजन किया गया। इसमें जैन धर्म-तेरापंथ से संबंधित गीतों को अंकों की जगह रखा गया।

डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में सभी को प्रेरणा दी। आंचलिक सह-संयोजिका संजय पारख ने बच्चों को प्रश्न-उत्तर के माध्यम से प्रेरणा दी एवं सभा के उपाध्यक्ष बजरंग लाल डागा ने अपने भाव व्यक्त किए। चंद्रकांता पुगलिया ने भी बच्चों को प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय सह-संयोजिका मनीषा भंसाली, प्रशिक्षिका नीलिमा सिरोहिया ने किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने मंगलाचरण किया। संतोष बांठिया, स्नेहलता डागा, सोनिया जैन, विक्टोरिया बैद ने बच्चों का रजिस्ट्रेशन किया एवं अन्य कार्य में भी सहयोग दिया।

नम्रता नाहटा, हेमलता बेगवानी, शशि नाहर, लक्ष्मी गिड़िया, विनीता पुगलिया, ममता बैद, कमलेश लुणिया, सरिता शामसुखा, रितु बांठिया, रेखा बैंगानी, सरिता गिड़िया, संजू नाहटा आदि प्रशिक्षिकाओं का विभिन्न गतिविधियों में योगदान रहा।

इस कार्यक्रम में बच्चों की प्रस्तुति एवं प्रेजेंटेशन में नीलिमा सिरोहिया, बीना जैन, जयश्री सुराणा, विनीता पुगलिया, लक्ष्मी गिड़िया, ममता बैद, आदि प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा।

साउथ हावड़ा ज्ञानशाला से लगभग १२५ बच्चों और २६ प्रशिक्षिकाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में अभिभावकों की अच्छी उपस्थिति थी।

साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा का सहयोग रहा। दक्षिण हावड़ा तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में पूरा कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सभा-संस्था के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

नवरात्रि आध्यात्मिक अनुष्ठान के आयोजन

आत्मशक्ति को बढ़ाने के लिए करें आध्यात्मिक अनुष्ठान

फरीदाबाद

साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी के सान्निध्य में नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान आयोजित किया गया। साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा कि शक्ति सब व्यक्तियों को चाहिए। शक्तिरूपी देवी है उसे सभी मानते हैं। शाक्त परंपरा में देवी की पूजा होती है, सनातन परंपरा में देवी ने महिसासुर का वध किया। राम विजयोल्लास के रूप में इसे मनाते हैं।

परमपूज्य गुरुदेवश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा अनुष्ठान निर्धारित किया। आंतरिक शक्ति बढ़ाने के लिए तप, जप किया जाता है। यह शक्ति और भक्ति आराधना का उत्तम समय माना जाता है। साध्वीश्री जी ने नवाह्निक अनुष्ठान का आह्वान किया।

साध्वी शुभप्रभा जी ने इन नव दिनों में जप के साथ-साथ नौ मंगलभावनाओं को व्याख्यायित किया। साध्वी कांतयशा जी ने प्रतिदिन ९ ग्रहों पर गीत का संगान किया।

सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान किया, जिसमें भाई-बहनों की अच्छी सहभागिता रही।

शनिवार सामायिक के साथ चौबीस तीर्थंकरों पर आधारित प्रतियोगिता रखी गई। प्रथम स्थान प्रभा सेठिया, द्वितीय सुनीता नाहटा एवं चंदा दुगड़, तृतीय विजय नाहटा ने प्राप्त किया।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में नवरात्रि के अवसर पर आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन हुआ। मुनि कुमद कुमार जी ने कहा कि नवरात्रि के दिनों में आसुरी एवं बुरी शक्तियाँ मनुष्य लोक में विचरण करने आती हैं। वे किसी को भी नुकसान पहुँचा सकती हैं। आध्यात्मिक अनुष्ठान मंत्र साधना के रूप में किया जाता है इससे हमारी शक्तियों का विकास होता है। आध्यात्मिक मंत्रों की शक्ति अचिंत्य होती है, इनकी साधना से विघ्न एवं उपद्रवों का शमन हो जाता है। आत्म-शक्तियों से संपन्न मनुष्य जीवन में विकास करता है।

कटक, ओड़िशा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान तेरापंथ सभा भवन में कराया गया। जिसमें अच्छी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि दुनिया में शक्ति का महत्त्व है, शक्ति के बिना व्यक्ति का मूल्यांकन कम हो जाता है। शक्तिसंपन्न वही व्यक्ति बन सकता है जो प्रभु की उपासना करता है, जो अपने आराध्य के प्रति समर्पित होता है। समर्पण के बिना व्यक्ति शक्ति को जागृत नहीं कर सकता है।

मुनिश्री ने कहा कि अरिहंत भगवान चंद्रमा से अधिक निर्मल होते हैं, चंद्रमा में दाग होता है, लेकिन अरिहंत व सिद्ध भगवान में कोई दाग नहीं होता है। अरिहंत-सिद्ध सूर्य से अधिक तेजस्वी व प्रकाश वाले होते हैं। अरिहंत भगवान सागर से भी अधिक गंभीर होते हैं, गंभीरता महानता का गुण है, गंभीर व्यक्ति आदरणीय होता है। जो छिछला होता है वह अधीर होता है। उतावला होता है, बिना सोचे कार्य करता है वह सफलता को प्राप्त नहीं होता है सफलता को वही प्राप्त कर सकता है जो गंभीर है। मुनिश्री ने सबको आध्यात्मिक साधना की प्रेरणा दी। मुनि परमानंद जी ने अनुष्ठान कराया, मुनि कुणाल कुमार जी ने चौबीसी का संगान किया।

सिकंदराबाद

तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में लोगस्स जाप के साथ उवसग्गहरं का चामत्कारिक पाठ श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह के साथ किया गया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि वर्तमान समय में समस्या बहुत है, किसी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है, कोई मानसिक परेशानी में है, कोई बाहरी हवा से प्रभावित है। इन सब रोगों का अचूक उपाय है—'उवसग्गहरं स्त्रोत'। बीज मंत्र के साथ इसकी साधना हमारे जीवन को खुशहाल बनाने वाली है।

आचार्य भद्रबाहु स्वामी कृत स्त्रोत उस समय में भी समस्या का समाधान करने वाला था और आज भी इसकी उपयोगिता उसमें भी बढ़-चढ़कर है। रोज २०० से अधिक संख्या में श्रावक-श्रविकाएँ संभागी बन रहे हैं। सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है, रोज समय पर पधारकर लाभ उठाएँ।

भीलवाड़ा

प्रज्ञा भारती महावीर कॉलोनी में मुनि पारस कुमार जी, मुनि शांतिप्रिय और तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में नवरात्रि पर्व पर आध्यात्मिक अनुष्ठान निरंतर चला। इस अनुष्ठान में मंत्रोच्चार द्वारा ध्यान, जप के अनेक प्रयोग करवाए जाते हैं।

साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि आध्यात्मिक अनुष्ठान आध्यात्मिकता की ओर ले जाने वाली प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति के भीतर चेतना का जागरण होता है। नवरात्र साधना आंतरिक दुष्प्रवृत्तियों एवं व्यक्तित्व का परिशोधन करके हमारे भीतर नई ऊर्जा का संचरण करती है। भीतर छुपी हुई शक्तियों का प्रस्फुटन होता है।

साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी द्वारा मंत्रों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है, इस पर बताया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा संस्था एवं तेमम द्वारा सामूहिक नीवी, आयंबिल एवं अन्य आध्यात्मिक अनुष्ठान भी आयोजित कराए गए।

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गुलाबबाड़ी में नवरात्र पर आध्यात्मिक अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कोटा दक्षिण के विधायक संदीप शर्मा एवं आयुष ओसवाल तथा उनके सहयोगियों ने साध्वीश्री जी से मंगल आशीर्वाद लिया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि नवरात्र का समय शक्ति संवर्धन का समय है। अपने आपको ऊर्जामय बनाने का समय है। यह समय ऊर्जा के प्रस्फोटन का समय है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर ऊर्जा का अक्षय भंडार निहित है, किंतु उसका सम्यक् रूप से उद्घाटन कैसे हो? इस विधि को जाने बिना व्यक्ति अपनी शक्ति से लाभान्वित नहीं हो सकता। मंत्र साधना के द्वारा शक्ति का जागरण हो सकता है। अपेक्षा है व्यक्ति नवरात्र पर आध्यात्मिक अनुष्ठान कर अपने आपको ऊर्जामय एवं शक्तिमय बनाए।

विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि आज मैं साध्वीश्री जी के दर्शन पाकर धन्य हो गया हूँ। मुझे जब भी अवसर मिलता है साधु-संतों की सेवा-उपासना का लाभ लेता हूँ। सभा के मंत्री धर्मचंद जैन ने संदीप शर्मा का परिचय देते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा ने स्वागत भाषण दिया। सभा की ओर से अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया।

देवरानी-जेठानी पर सम्मेलन का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में सास-बहू, देवरानी-जेठानी का सम्मेलन आयोजित हुआ। साध्वी सोमलता जी ने बताया कि रिश्ते मोतियों की तरह महँगे होते हैं, आसानी से नहीं मिलते। अतः उन्हें सहेजकर रखना चाहिए।

साध्वी संचितयशा जी एवं साध्वी रक्षितयशा जी ने सास-बहू, देवरानी-जेठानी का इंटरव्यू लिया एवं परिषद के समक्ष उनके आपस के विचार रखे, उन्हीं की जुबानी साध्वी शकुंतलाश्री जी एवं साध्वी जागृतप्रभा जी ने परमेष्ठी वंदना करवाई।

संयोजिका प्रीति डागलिया ने गीत के माध्यम से, राजश्री कच्छारा एवं रेखा कच्छारा देवरानी-जेठानी ने आपसी प्यार एवं उनके बीच होने वाली नोक-झोंक की सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन किया संयोजिका भावना धाकड़ एवं उनकी देवरानी दिव्या धाकड़ ने। दक्षिण मुंबई सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, सूरजमल दुगड़, सुरेश कुमार डागलिया, मोहिनी देवी चोरड़िया, रेखा धाकड़, प्रीति डागलिया, भावना धाकड़, वनिता धाकड़ सहित अनेक जन तथा लगभग ७५ श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही।

एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

केलवा।

साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन तेरापंथी सभा व तेमम के तत्त्वावधान में किया गया। शिविर में मुंबई से समागत वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक और मुद्रा विशेषज्ञ पारसमल दुगड़ व विमला देवी दुगड़ के निर्देशन में यह कार्यक्रम रखा गया।

शिविर लगभग ८ सेशन तक चला। जिसमें मंत्र, प्रेक्षा, आसन, प्राणायाम, प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा, प्रेक्षा परिचय, कायोत्सर्ग, मुद्रा विज्ञान, योगिक क्रियाएँ, श्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा व जिज्ञासा समाधान चला।

इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महापज्ञ जी का एक महान अवदान है। इससे सैकड़ों लोगों ने अपने जीवन की दिशा व दशा बदली है।

केलवा के भाई-बहनों ने अच्छी संख्या में शिविर में भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण प्रेक्षाध्यान गीत के द्वारा हुआ। स्वागत भाषण महिला मंडल अध्यक्षा संगीता कोठारी व आभार ज्ञापन तेरापंथ सभा के मंत्री पूर्णमल गांग ने किया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में पारसमल दुगड़ व विमला दुगड़ का सम्मान साहित्य व हार द्वारा किया गया।

शिविर में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल व अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक बिग बॉस प्रतियोगिता का आयोजन

गंगाशहर।

मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ किशोर मंडल, गंगाशहर द्वारा 'आध्यात्मिक बिग बॉस' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तेयुप के तत्त्वावधान में आयोजित इस बिग बॉस प्रतियोगिता में तप टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ज्ञान टीम द्वितीय एवं चारित्र व दर्शन टीम तृतीय स्थान पर रही। जिनेश बैद ने बेस्ट कैप्टन का खिताब जीता। प्रतियोगिता में चयनित ४० प्रतिभागी संभागी बने, जिन्हें कई टास्क एवं बाधाओं को पार कर प्रतियोगिता में आगे बढ़ना था।

तेयुप उपाध्यक्ष विनीत बोथरा ने बताया कि मुख्य तौर पर बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट, पुशअप राउंड, कॉइन गेम, चातुर्मास मैप, नौ तत्त्व सुडोकू जैसे कई टास्क प्रतिभागियों ने पूरे किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, मंत्री रतनलाल छल्लानी, तेयुप मंत्री भरत गोलछा, सहमंत्री ऋषभ लालानी ने विजेताओं को पदक प्रदान किए।

प्रतियोगिता की सफलता में किशोर मंडल संयोजक दिपेश बैद, कन्या मंडल संयोजिका योगिता भूरा और उनकी पूरी टीम का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र डागा व ब्लू ब्रिग्रेड मेंबर कुलदीप छाजेड़ ने किया।

✦ कायिक स्थिरता ध्यान-साधना का आवश्यक अंग है। उसे साध लो। तुम्हें प्रथम चरण की सफलता मिल जाएगी।
—आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय बाल संस्कार निर्माण आवासीय शिविर 'अरुणोदय' का आयोजन

साहूकारपेट।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'अरुणोदय' ज्ञानशाला के त्रिदिवसीय शिविर में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि ज्ञानशाला तेरापंथ धर्मसंघ की अनमोल विरासत और गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा प्रदत्त ऐसा वरदान है जो पीढ़ी दर पीढ़ी संघ संवर्धन में योगभूत बन रहा है। ऐसे शिविरों के माध्यम से बाल जीवन को पोषण मिलता है, संघीय संस्कारों को पुष्ट रखने की प्रेरणा मिलती है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि ज्ञानार्थी ज्ञान के साथ विनय-विवेक संपन्न बने। अपने अभिभावकों के प्रति सम्मान और आदर की भावना रखें। भगवान महावीर जैसा बनने के लिए सहनशीलता का विकास करना चाहिए। जितना हो सके अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास हो। साध्वीश्री जी द्वारा बच्चों को वैराग्य पथ पर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की गई।

प्रशिक्षिकाओं ने संगान किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड ने शुभभावना व्यक्त की। सभा मंत्री अशोक खतंग ने विचार प्रस्तुत किए। हिमांशु डूंगरवाल ने ज्ञानार्थियों के परिचय सत्र का संचालन किया। किशोर मंडल ने 'बिग बॉस' कार्यक्रम एवं अनेक ग्रेम्स से बच्चों का मन मोहा। बबीता बोकड़िया एवं सेजल समदड़िया ने आसन-प्राणायाम करवाया। How to control anger कक्षा साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने ली। साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने जैन दर्शन का प्रायोगिक प्रशिक्षण एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी के तत्त्वज्ञान का प्रायोगिक/सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया। टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने 'जीवन में जैनत्व को कैसे जीएँ' इसके टिप्स बताए। साध्वीवृंद द्वारा कायोत्सर्ग, ध्यान, मुद्रा आदि के प्रयोग भी करवाए गए। ममता, माही मूथा ने 'मिड ब्रेन एक्टीवेशन' करवाया।

संयोजकद्वय नरेंद्र भंडारी व मनोज गादिया के साथ मनोज डूंगरवाल राजेश सांड, मनोज सेठिया, ताराचंद बोहरा आदि कार्यकर्ताओं की भूमिका रही। बसंता बाबेल, अर्चना कटारिया, अनिता तातेड़, सुभद्रा लूणावत आदि ने दायित्व निभाया। चेन्नई ज्ञानशाला प्रभारी सुरेश तातेड़ का श्रम रहा। सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। शिविर में आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया एवं विशेष प्रशिक्षण प्रदाता शिक्षकों का सम्मान किया गया।

जप अनुष्ठान का आयोजन

कांकरोली।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में आयोजित तेममं की ओर से जैन धर्म के बीज मंत्र का सामूहिक जप अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस आध्यात्मिक जप अनुष्ठान में स्वस्तिक आकार में १०८ पति-पत्नी के जोड़े एवं अन्य जोड़े कुल मिलाकर लगभग १४५ पति-पत्नी के जोड़े संभागी रहे। जोड़ों के अतिरिक्त भी काफी संख्या में भाई-बहन उपस्थित थे। इसमें बीज मंत्र की एक माला एवं २७ बार उवसग्गहरं स्तोत्र तथा पूर्व में पार्श्वनाथ प्रस्तुति का सामूहिक मंगल संगान किया।

अनुष्ठान का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी आदि तेयुप के सदस्य, महिला मंडल की अध्यक्षा-मंत्री आदि एवं कन्या मंडल की बहनों तथा टीपीएफ के कार्यकर्ता आदि सभी का सहयोग रहा। तेममं मंत्री मनीषा कच्छारा ने आभार प्रकट किया। घोइंदा, विनोल, बोरज, भाणा, आदि क्षेत्र से भाई-बहनों ने भाग लिया।

वर्ग पहेली प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

बालोतरा।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में वर्ग पहेली प्रतियोगिता परीक्षा का परिणाम व सम्मान समारोह कार्यक्रम न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि निर्जरा के १२ प्रकारों में एक प्रकार है—स्वाध्याय। स्वाध्याय करने से अनेक कर्मों की निर्जरा होती है। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस प्रतियोगिता के प्रायोजक परिवार का लाभ निर्मला देवी डूंगरचंद, संकलेचा परिवार ने लिया। इस वर्ग पहेली में ६ पेपर थे जो सभी श्रावक-श्राविकाओं को घर पर बैठकर ही भरने थे जिसमें अनेक पुस्तकों का सभी भाई-बहनों ने स्वाध्याय करके यह प्रश्न पुस्तिका भरी और स्वाध्याय कर कर्मों की निर्जरा की।

अंत में लिखित परीक्षा ली गई, जिसमें ६० संभागियों ने परीक्षा दी। प्रथम स्थान पर राकेश श्रीश्रीमाल, द्वितीय स्थान पर संगीता बोथरा, तीसरे स्थान पर पूजा ओस्तवाल व चतुर्थ स्थान पर रुचिका, तातेड़ रहे। तथा ७ जनों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिया गया। जिन्होंने भी लिखित परीक्षा दी उन सभी को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन सहमंत्री रेखा बालड़ ने किया। कार्यक्रम में परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, लूणी देवी गोलेच्छा सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

मासखमण तप अभिनंदन

गांधीनगर

सभा भवन में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने मुक्ति के चार सोपान बताए, उसमें चौथा सोपान है—तप। तप वह प्रकाश पुंज है, जिसके आलोक से आत्मा आलोकित होकर नई रश्मियों को प्राप्त करती है। तप वह मंगल कलश है, जिसे पीने वाला अपने जीवन को मंगलमय बना लेता है। तप के दुरुह राह पर वही बढ़ सकता है, जिसका मनोबल हिमालय की तरह अडिग और अप्रकंप हो।

बहन नीलम चिंडालिया ने तप का नीलम पहनकर स्वयं को भावित किया है, अपनी अटल संकल्प शक्ति का परिचय दिया है। अब इसी तरह तप में आगे बढ़ते हुए निरंतर आत्मोन्नति करते रहें।

मुनि भरत कुमार जी ने उद्‌गार व्यक्त किए। बाल संत जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया। तपस्विनी बहन नीलम चिंडालिया ने मासखमण का प्रत्याख्यान किया। सभा द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

संगठन मंत्री धर्मेश कोठारी ने बताया कि इस चातुर्मास में अभी तक शर्मिला देवी भंसाली, सुमित्रा गादिया, मंजु भंडारी, रानी धोका, गुलाबबाई सुखानी, रेखा खांटेड ने मासखमण का तथा प्रकाश बाई गोलेच्छा, महावीर मूथा, नीतू भंसाली ने आयंबिल मासखमण किया है।

सभा अध्यक्ष कमल दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। परिवार की ओर से गीत की प्रस्तुति हुई। विमल शामसुखा, सुनीता, गरिमा ने तप की अनुमोदना की। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन मुनि भरत कुमार जी ने किया।

तप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

एरोली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा ऐरोली के वरिष्ठ श्रावक महेंद्र सिंघवी के मासखमण तप अनुष्ठान का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। जैन संस्कारक सुरेश मोटावत एवं देवेंद्र बोहरा ने सभी मंत्रों द्वारा मासखमण तप अनुष्ठान कार्यक्रम संपन्न करवाया।

नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। दोनों संस्कारकों ने महेंद्र सिंघवी के मासखमण तप की अनुमोदना करते हुए आगे भी आपका स्वास्थ्य अच्छा रहे, ऐसी मंगलकामना प्रेषित की तथा एक दिवसीय त्याग करवाया। कार्यक्रम में पूरे सिंघवी परिवार एवं अनुमोदना कार्यक्रम में पधारे हुए सभी मेहमानों की उपस्थिति रही। सिंघवी परिवार की पुत्रवधू अंकिता सिंघवी ने दोनों संस्कारकों का आभार प्रकट किया।

हम आत्म जागरण के साथ अंतर्मुखी बनें

टी-दासरहल्ली

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान में संभागी भाई बहिनों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि इस अनुष्ठान का परम लक्ष्य है—सिद्ध, बुद्ध, मुक्त परमात्मा के शाश्वत गुणों की स्तुति करते हुए हम भी उस शाश्वत स्वरूप को प्राप्त करने की साधना करें।

इस प्रकार अनुष्ठान से हम आत्म जागरण के साथ अंतर्मुखी बनें। शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने महासती अंजना के व्याख्यान का रोचक प्रसंग भी सुनाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा ट्रस्ट, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद एवं दासरहल्ली व निकटतम क्षेत्रों से सकल जैन समाज के श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही।

पैंसठिया यंत्र अनुष्ठान के आयोजन

सवाई माधोपुर

अणुव्रत भवन में मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र अनुष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ। अनुष्ठान में आदर्श नगर सहित राजनगर, बाल मंदिर कॉलोनी, एम०पी० कॉलोनी, इंद्रा कॉलोनी, आवासन मंडल, शहर सवाई माधोपुर के सैकड़ों धर्मानुयायियों ने निर्धारित पोशाक में भाग लिया। लगभग एक घंटे तक चले जप अनुष्ठान के पश्चात मुनिश्री ने जप अनुष्ठान के माध्यम से स्व० तथा पर-कल्याण की प्रेरणा दी व नैतिकता युक्त धार्मिकता को जीवन का अंग बनाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर मुनि देवार्यकुमार जी व मुनि राहुल कुमार जी ने भी श्रावक-श्राविकाओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

माधावरम्, चेन्नई

तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के तत्त्वावधान में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में नवरात्रि के अंतर्गत १०८ पैंसठिया छंद एवं यंत्र का विशेष अनुष्ठान हुआ। मुनि सुधाकर कुमार जी ने बीज मंत्रों के साथ अनुष्ठान कराया। तेरापंथ नगर की बहनों ने सुमधुर स्वर में पैंसठिया छंद का निरंतर संगान किया।

मुनिश्री ने कहा कि समय परिवर्तनशील है। किसी के जीवन में एक सरीखी परिस्थितियाँ नहीं रहती हैं। उत्थान-पतन व सुख-दुःख की लहरें उत्पन्न होती रहती हैं। मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर ने अकाल मृत्यु के जो सात कारण बताए हैं उनमें भावेश की तीव्रता एक प्रमुख कारण है। आवेश के कारण शरीर और मस्तिष्क पर बहुत हानिकारक प्रभाव होता है। आज हर मनुष्य का जीवन व्यस्त है। सबके सामने नाना प्रकार की चुनौतियाँ हैं। इस स्थिति में सहजता से जीने का अभ्यास जरूरी है।

वर्तमान में आगम ही जैन धर्म का आधार

टोहाना।

आगम जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ हैं, जिनमें भगवान महावीर स्वामी की वाणी गुंफित है। वर्तमान में आगम ही जैन धर्म का आधार और मार्गदर्शक है। यह उद्‌गार शासनश्री साध्वी बसंतप्रभा जी ने तेरापंथ भवन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि उवासगदसाओ आगम में भगवान महावीर के १० विशिष्ट श्रावकों का वर्णन है। जिसमें हमें जानकारी मिलती है कि श्रद्धानिष्ठ व समर्पित श्रावक कैसा होना चाहिए।

राष्ट्रीय कॉर्पोरेट सम्मेलन का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में ‘राष्ट्रीय कॉर्पोरेट सम्मेलन’ एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ टीपीएफ सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। टीपीएफ फेमिना टीम द्वारा राष्ट्रीय टीम का स्वागत एक गीत के माध्यम से किया गया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि जिस गुब्बारे में हीलियम गैस भरी होती है वह ऊपर की ओर उठता है वैसे ही जिस व्यक्ति के भीतर अध्यात्म की गैस भरी होती है वह आकाश को छूने का जज्बा रखता है। अध्यात्म हमारे भीतर सहनशीलता, विनम्रता, पारस्परिक सहयोग, सुख और शांति का विकास करता है। सहनशीलता, विनम्रता आदि को हम पैसे से नहीं खरीद सकते हैं। अध्यात्म के पौधे पर ही यह फल लग सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि अध्यात्म के साथ-साथ आत्मीयता का विकास हो, यही काम्य है।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि हमारे जीवन के दो पक्ष हैं—पहला है बौद्धिक पक्ष और दूसरा है—आध्यात्मिक पक्ष। यदि हमारे ये दोनों पक्ष मजबूत हैं तो हम शीघ्र ही मंजिल को प्राप्त कर सकते हैं। आज के युग में बौद्धिकता के साथ-साथ अध्यात्म का समन्वय होना भी बहुत जरूरी है।

साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से सभी टीपीएफ सदस्यों को संघ सेवा में लगे रहने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के शुरुआत में टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया एवं टीपीएफ द्वारा पिछले एक वर्ष में किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि टीपीएफ का काम नए प्रोफेशनल्स को जोड़ना है। जब तक जुड़ाव न हो, हम संघ के प्रति दायित्व-बोध नहीं जगा सकेंगे। इसका इस वर्ष का घोष है—चमकना, संघ के फलक पर अपनी चमक बिखेरना। टीपीएफ के राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत ने Shine के पाँचों अक्षरों की मीमांसा की। उन्होंने टीपीएफ की अनेक गतिविधियों का विवेचन किया। टीपीएफ साउथ जोन अध्यक्ष दिनेश धोखा ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल ने सभी स्थानीय संस्थाओं की ओर से टीपीएफ को शुभकामनाएँ प्रेषित की। टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, टीपीएफ राष्ट्रीय प्रोजेक्ट चेयरमैन दीपक संचेती एवं नवीन सुराणा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य कन्दर्प दुधोड़िया की उपस्थिति रही।

प्रथम सत्र का संचालन टीपीएफ जोनल मंत्री रक्षिता बोहरा एवं टीपीएफ सहमंत्री अणुव्रत सुराणा ने किया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस खिलाड़ी नैना जायसवाल का वक्तव्य रहा। उन्होंने बताया कि कैसे १० क्लास उन्होंने ८ वर्ष की उम्र में एवं १७ साल की उम्र में पीएच-डी की। उन्होंने कई मेमोरी टिप्स भी दिए। तत्पश्चात भाग्यनगर मेटल लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर देवेंद्र सुराणा का वक्तव्य रहा एवं उन्होंने लोकल तो ग्लोबल विषय पर जानकारी दी। द्वितीय सत्र का संचालन टीपीएफ जोनल सहमंत्री ऋषभ लुनिया ने किया।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र में स्पीकर अरुण वेंकट राव के द्वारा स्टार्टअप बनाने के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किन चीजों को हमें ध्यान में रखकर किसी भी स्टार्टअप की शुरुआत करनी चाहिए। उन्होंने सात नियम समझाए। तत्पश्चात एक पैनल बहस रखी गई, जिसके मुख्य वक्ता शीमार फाउंडर ऋषि खारे एवं एटी एवं टी के पूर्व राष्ट्रीय हेड उदय दिनत्याला थे। इस सत्र का संचालन पंकज संचेती ने किया।

तत्पश्चात एक नेटवर्किंग गेम का आयोजन किया गया एवं विजेता टीम को पुरस्कृत किया गया। इसका संचालन टीपीएफ सदस्य मोक्षा सुराणा एवं निधि जैन द्वारा किया गया। अंतिम सत्र में साध्वी त्रिशला कुमारी जी एवं कल्पयशा जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक पंकज संचेती, ऋषभ लुनिया, पुनीत दुगड़ एवं टीपीएफ के कई सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन टीपीएफ मंत्री सुनील पगारिया ने किया।

मेधावी छात्र एवं प्रोफेशनल सम्मान समारोह-२०२२ का आयोजन

भीलवाड़ा।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में मेधावी छात्र एवं प्रोफेशनल सम्मान समारोह-२०२२, सुनहरा भविष्य, का आयोजन हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि हर इंसान गुड से बेस्ट की दिशा में अग्रसर होना चाहता है। सफलता आसमान से नहीं उतरती, धरती से नहीं निकलती। जीरो से हीरो बनने का एक सूत्र है अपने ब्रेन को हमेशा कूल-कूल रखें। हँसना, मुस्कुराना, प्रसन्नता पवित्रता का टॉनिक है। जहाँ आशा है वहाँ विश्वास है, ९९ बार असफल होने पर भी एक गोल्डन चांस आपके गुड लक की इबादत को रच देता है।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। टीपीएफ मेंबर्स ने हरिवंश राय बच्चन की मोटिवेशनल कविता का संगान किया। टीपीएफ गीत का संगान टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष निर्मल सुतरिया ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में टीपीएफ के राष्ट्रीय सहमंत्री नवीन वागरेचा, एनईसी मेंबर विनोद पितलिया, सेंट्रल जोन उपाध्यक्ष करण सिंह सहित टीपीएफ एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में राकेश सुतरिया टीपीएफ अध्यक्ष ने सभी का स्वागत भाषण द्वारा किया। शाखा मंत्री अजय नौलखा ने टीपीएफ के बारे में जानकारी दी। टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। राष्ट्रीय सहमंत्री नवीन वागरेचा, विनोद पितलिया एवं जसराज चोरड़िया ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीय एवं शाखा टीम द्वारा लगभग ८५ मेधावी बच्चों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्तप्रभा जी और साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

प्रेणता बाबेल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन नीतू सुतरिया ने किया। साथ ही प्रेणता बाबेल, मनाली चोरड़िया, अंकित जैन, सौरभ लोढ़ा, पायल बुलिया ने बच्चों के मेधावी सम्मान के संचालन में योगदान दिया। सभा अध्यक्ष ने सेमिनार की सफलता में सहयोगी टीम के सभी सदस्यों का उनके श्रम शक्ति और समय नियोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

मेधावी सम्मान समारोह का आयोजन

फरीदाबाद।

साध्वी डॉ० शुभप्रभा जी के सान्निध्य में टीपीएफ द्वारा मेधावी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

साध्वी शुभप्रभा जी ने प्रश्नों के माध्यम से अपनी बात शुरू की—जीवन में सबसे बड़ी संपदा क्या—संस्कार। सबसे बड़ी दवा क्या—मुस्कान। सबसे बड़ा हथियार क्या—धैर्य। सबसे बड़ा सुरक्षा कवच क्या—संयम।

हमारे पास सह-संस्कार हो, मुस्कान हो, धैर्य हो और संयम हो तो हर क्षेत्र में सफलता स्वयं मिलेगी। टीपीएफ का मतलब है—टर्निंग पॉइंट ऑफ फ्यूचर। अगर आप अपना ब्राइट फ्यूचर बनाना चाहते हो तो कुछ राइट स्टेप्स अपनाएँ।

साध्वी कांतयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने भावाभिव्यक्ति दी। टीपीएफ अध्यक्ष विजय नाहटा, दिल्ली से समागत नार्थ जोन अध्यक्ष सलिल लुंकड़, नार्थ टीपीएफ मंत्री स्वीटी जैन, सभाध्यक्ष गुलाब बैद, महिला मंडल अध्यक्षा सुमंगला बोरड़, तेयुप अध्यक्ष विवेक बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आईसी० जैन आदि। टीपीएफ फेमिना बहनों, संयोजिका ललिता आदि ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री भरत बेंगवानी ने किया।

लगभग ३० मेधावी छात्र-छात्राओं को मंडल मोमेंटो द्वारा सम्मानित किया गया। अंत में गेम का आयोजन एवं आभार ज्ञापन संयोजिका ललिता बैद एवं खुशबू सेठिया ने किया। लोगों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

संस्कारों की सुरभि से सुरक्षित हो कन्याएँ

साहूकारपेट, चेन्नई।

तेरापंथ भवन में टीपीएफ एवं तेममं के संयुक्त तत्त्वावधान में Smart Girl Programme का दो दिवसीय कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि संस्कारों की पुष्टि के लिए ऐसे प्रेरणाप्रदायक कार्यक्रमों का होना आवश्यक है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी और साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। वेलूर से समागत प्रशिक्षिका मेधना देसरला ने कहा कि जीवन में आने वाली उलझनों को सुलझाने के लिए सुरक्षा आवश्यक है। टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़, तेममं की वरिष्ठ उपाध्यक्षा अलका खटेड़, कोषाध्यक्ष हेमखता नाहर, उपाध्यक्ष गुणवंती खांटेड़, कन्या मंडल प्रभारी वंदना पगारिया, टीपीएफ की आंचलिक संयोजिका अनिता सुराणा की सक्रिय सहभागिता रही।

टीपीएफ के अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि कन्याएँ दहलीज के दीये की तरह प्रकाशवान बनकर दो कुलों को रोशन करती है।

इस अवसर पर नितिका बरड़िया ने अठारह के तप का प्रत्याख्यान किया। बरड़िया परिवार की बहनों ने अभिनंदन गीत प्रस्तुत किया। मानस बरड़िया ने बधाई दी। साध्वीवृंद ने अनुमोदन गीत का संगान किया।

तेरापंथी सभा की ओर से तपस्विनी बहन का सम्मान किया गया।

कालूगणीजी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

जीन्द।

तेरापंथ सभा में तेरापंथ धर्मसंघ में अष्टम् अधिशास्ता आचार्यश्री कालूगणी की पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण साध्वी चिन्मययशा जी ने भजन के माध्यम से किया। साध्वी शशिकला जी ने कहा कि कालूगणी तेरापंथ धर्मसंघ के दिव्यतम आचार्यों में से एक थे। आपने तेरापंथ धर्मसंघ को दो-दो महान आचार्य दिए। आपके शासनकाल में धर्मसंघ में संस्कृत भाषा का विकास हुआ।

साध्वी संयमप्रभा जी ने आचार्यश्री कालूगणी के अंतिम समय की घटना बड़े रोचक ढंग से सुनाई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष खजांचीलाल जैन, मंत्री नारायण सिंह रोहिल्ला, सहमंत्री कुणाल मित्तल, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल, मंत्री ओमपति गोयल आदि उपस्थित रहे।

अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन

नेरुल (नवी मुंबई)।

अणुव्रत समिति के अंतर्गत क्षेत्र नई मुंबई द्वारा आयोजित कार्यक्रम में नवी मुंबई क्षेत्रीय संयोजिका आशा सोनी ने मराठी स्कूल के बच्चों को अणुव्रत के बारे में जानकारी दी तथा मेडिटेशन कराया। स्कूल के बच्चों ने संकल्प लिए। स्कूल में उपस्थित प्रिंसिपल महोदया ने जीवन-विज्ञान और अणुव्रत गीत का जिक्र करते हुए कहा कि हर स्कूल के लिए जीवन-विज्ञान और अणुव्रत के नियम लागू हो जाएँ तो सभी का जीवन सफल बन जाए, हम बच्चों को इसकी प्रेरणा जरूर दें।

कार्यक्रम में मधु धोखा का विशेष सहयोग रहा।

✦ *श्रद्धा का मतलब यह नहीं है कि तुम गलत बात को पकड़ने के बाद उसे छोड़ो ही नहीं। श्रद्धा यह रखो कि मैं गलत लगने वाली बात को छोड़ भी सकता हूँ।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

संगठन सम्मेलन, फिट युवा-हिट युवा

छतरपुर, दिल्ली।

तेयुप ने संगठन सम्मेलन के अंतर्गत प्रथम कार्यक्रम का आयोजन दक्षिण दिल्ली के क्षेत्र में किया। 'फिट युवा-हिट युवा' आयाम के अंतर्गत 'लव फॉर गेम्स' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। बिमल गुनेचा ने योग के प्रभावशाली तरीके से वार्मअप करवाया और स्वस्थ रहने के टिप्स शेयर किए। दक्षिण दिल्ली से प्रिया सुराणा व शिल्पी पुगलिया ने सभी को गेम्स खिलाए।

तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा ने सभी युवा साथियों और विशिष्ट अतिथियों से दक्षिण दिल्ली में युवाओं की सहभागिता बढ़ाने के सुझाव आमंत्रित किए और उन सुझावों पर चर्चा की। उन्होंने तेयुप के विभिन्न आयामों से सभी को अवगत करवाया और सभी युवाओं को संगठन से जुड़ने और इसे और सुदृढ़ करने के लिए प्रेरित किया। सभी युवाओं की तरफ से विकास सुराणा ने लक्ष्मीपत बोथरा को विशेष सहयोग के लिए आभार प्रकट किया व उनका सम्मान हीरालाल गेलड़ा द्वारा कराया गया। तेयुप मंत्री अभिनंदन बेद ने सभी अतिथियों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में दिल्ली सभा से पुखराज सेठिया, साउथ दिल्ली सभा के अध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा की उपस्थिति रही। तेयुप के परामर्शक धनपत बोथरा, मनोज बोरड़, साउथ दिल्ली ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका सुमन कोठारी, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष राजेश भंसाली, पुखराज लोढ़ा सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं गणमान्य-जनों की उपस्थिति रही।

मनीष पटावरी द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

दंपति सम्मेलन का आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर।

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में मेघराज तातेड़ भवन में तेयुप के तत्त्वावधान में दंपति सम्मेलन का आयोजन किया गया। तेयुप, सरदारपुरा सदस्यों–निरंजन तातेड़, नरेंद्र सेठिया, योगेश तातेड़ और विकास चोपड़ा के युगल द्वारा गीतिका के संगान से कार्यक्रम का मंगलाचरण हुआ। खुशबू संचेती और दीक्षा कोठारी ने कठपुतली जोड़ी के करतब से सभी समागंतुक दंपतियों का स्वागत किया।

साध्वी जिनबाला जी ने दाम्पत्य जीवन को सुंदर बनाने के कई उपयोगी सूत्र दिए। साध्वीश्री जी ने बताया कि समय पर सहन करना, नुक्ताचीनी न करना, संदेह न करना, एक-दूसरे की जरूरत का ध्यान रखना, प्रमोद भावना आदि छोटी-छोटी बातों से सरसता आ जाती है। समता, सद्भाव, समन्वय, सम्मान सफल दाम्पत्य जीवन के सूत्र हैं।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने प्रमोद भावों के विकास के सूत्र बताए। साध्वी भव्यप्रभा जी ने कहा कि दाम्पत्य जीवन की शुरुआत विवाह से होती है। विवाह में 'वाह' है, पर यह ध्यान रखें कि वह 'तबाह' तक न पहुँच जाए। साध्वीश्री जी ने उत्तम विवाहित जीवन के लिए विशेष ध्यातव्य बिंदुओं के बारे में बताया। साध्वी महकप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन अंकित भंडारी और ज्योति भंडारी ने किया।

विनीता-रविंद्र सालेचा, कनक-नरेंद्र सेठिया, योगिता-निर्मल छल्लाणी लक्की ड्रॉ व क्विज में विजेता रहे। दंपति सम्मेलन में लगभग ६० जोड़ों ने भाग लिया।

'जो चाहिए सो पाइए' का आयोजन

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में एवं मुनि कुमुद कुमार जी के निर्देशन में तेयुप द्वारा 'जो चाहिए सो पाइए' कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि जीवन में सम्यग् ज्ञान होना आवश्यक है। ज्ञान के अभाव में व्यक्ति अकरणीय कार्य अधिक करता है। ज्ञान चेतना से सही-गलत का विवेक जागृत होता है। ज्ञान के साथ विवेक का योग मणि कांचन की तरह होता है।

व्यक्ति भौतिक विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक विकास की तरफ भी गतिशील बने। आत्मविकास का लक्ष्य सतत क्रियाशील होने से भीतर की चेतना जागृत होती है। जीवन में कैसी भी परिस्थिति आए व्यक्ति उनसे सामना करने का अभ्यास करे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि मैं सबके प्रति मंगलकामना करता हूँ कि आप सभी ने ज्ञान प्राप्ति की दिशा में स्वयं को नियोजित किया। ज्ञान विकास के ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर होने से चेतना का रूपांतरण होता है। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि मुनि कुमुद कुमार जी के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम को संचालित करते हुए मुनिश्री ने सहभागियों से विभिन्न विषयों में सवाल-जवाब किए। तेयुप के उपाध्यक्ष दीपक जैन ने समण, श्रमण एवं आचार्य वर्ग से ज्ञानवर्धक प्रश्नों के द्वारा अर्जित ज्ञान का साक्षात्कार लिया। तेयुप सहमंत्री मनीष जैन ने विषय प्रस्तुति दी। समय पालक की भूमिका गौरव विमल जैन ने पूर्ण की। तेयुप के सदस्यों के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। आभार ज्ञापन यश जैन ने किया।

सेवा कार्य

बेहाला।

आचार्य भिक्षु के २२०वें चरमोत्सव के उपलक्ष्य में तेयुप ने सेवा कार्य का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। 'वाइस ऑफ वर्ल्ड' नामक ब्लाइंड स्कूल में बच्चों को खाना खिलाया गया। इस सेवा कार्य में तेयुप के सभी सदस्य उपस्थित थे। स्व० प्रिंस कठोतिया के जयंती पर यह कार्यक्रम किशोर कुमार कठोतिया के सहयोग से संपन्न हुआ।

मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन

अमराईवाड़ी।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा मेगा ब्लड टेस्ट कैंप का आयोजन किया गया। एटीडीसी संयोजक मुकेश सिंघवी ने नवकार मंत्र से कैंप की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने सभी का स्वागत किया। कैलाश बाफना ने कैंप के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की।

कैंप में बेजीक बॉडी प्रोफाइल एवं फुल बॉडी प्रोफाइल दो पैकेज रखे गए। कैंप के शुभेच्छक के रूप में रमेशचंद, रवि कुमार, पगारिया परिवार का सहयोग मिला।

जरूरत की सामग्री का वितरण

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा बैली चुक्की फाउंडेशन, केंगेरी उपनगर में आश्रित २५ बच्चों तथा उनकी देख-रेख करने वालों को अल्पाहार करवाया एवं जरूरत की सामग्री का वितरण किया। इस सेवा कार्य के सहयोगी हनुमानमल, संजय कुमार, बैद परिवार थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। तेयुप अध्यक्ष कौशल लोढ़ा ने सभी का स्वागत किया। सहयोगी बैद परिवार ने सेवा कार्य की सराहना की। सेवा कार्य प्रभारी नरेश बांठिया ने अनाथ आश्रम में जरूरत की सामग्री दी, उसके बारे में जानकारी दी।

इस अवसर अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। परिषद मंत्री विपुल पितलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य सहप्रभारी सुपार्श पटावरी ने किया।

वरिष्ठ श्रावक-श्राविका का सम्मान समारोह

किशनगढ़।

तेरापंथ भवन में तेयुप एवं तेममं के संयुक्त तत्त्वावधान में वरिष्ठ श्रावक-श्राविका सम्मान समारोह मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के सान्निध्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि वरिष्ठ सेवकों का सम्मान करना एक स्वस्थ परंपरा है। बुजुर्गों को भार नहीं उपहार समझना चाहिए। यह पूरे परिवार की आन-बान-शान होते हैं। इनके पास अनुभवों का खजाना होता है। वह परिवार धन्य होता है जिस परिवार में बुजुर्गों की सेवा उनके मन में शांति समाधि पर ध्यान दिया जाता है।

मुनि सुबोध कुमार जी ने कहा कि परिवार के सदस्यों को अपने भीतर में जो बुजुर्ग पाल रहे हैं, उनको समझें और दूर करें। उनका सत्कार-सम्मान कितना करते हैं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। आप इनके साथ तालमेल बिठाकर रखें, ताकि इनके भीतर में समाधि भाव रहे। ऐसा प्रयत्न करें।

कार्यक्रम महिला मंडल के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष माणकचंद गेलड़ा, मंत्री अजय कुमार, सुरेश घोड़ावत, कन्हैयालाल डूंगरवाल, तेयुप से संजय डूंगरवाल ने विचार रखे। महिला मंडल अध्यक्ष अंजु छाजेड़ ने बताया कि अभातेमम अधिवेशन में स्थानीय शाखा किशनगढ़ महिला मंडल को सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया। वरिष्ठ ८६ वर्ष के पन्नालाल बैंगानी व श्राविका में ८६ वर्ष की इचरज देवी जोगड़ की थी। लगभग ३२ श्रावक-श्राविकाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। संवत्सरी के अवसर पर जिन बच्चों ने उपवास, पौषध किए उनको भी पुरस्कार प्रदान किया गया। संचालन तेममं की करुणा जैन व आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री वर्तमान डूंगरवाल ने किया।

वास्तु की वैज्ञानिक व्याख्या जरूरी

माधावरम्, चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी माधावरम् ट्रस्ट एवं तेयुप के संयुक्त तत्त्वावधान एवं मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल प्रांगण में स्वस्थ, सुखी एवं समृद्ध जीवन में जैन ज्योतिष एवं वास्तु की भूमिका के विषय पर प्रवचन माला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि तमिलनाडु के राज्यपाल आर०एन० रवि, अति विशिष्ट अतिथि मद्रास हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मुनिश्वरनाथ भंडारी, विशिष्ट अतिथि प्रवीण जैन मारबल टी चेयरमैन एवं छत्रसिंह बेगवाड़ी वास्तु एवं ज्योतिष विशेषज्ञ विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुनिश्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक प्राणवान संस्कृति है। जीवन के सम्यक् निर्माण के अनेकों रंगों से भरी है। इसको उन्नत बनाने के लिए ऋषि-मुनियों ने स्वयं साधना-आराधना कर हमें सद्मार्ग बताया।

मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल ने कहा कि अध्यात्म जीने की कला सिखाता है। भौतिकवाद पर अध्यात्मवाद का अंकुश होना चाहिए। राज्यपाल ने जैन सिद्धांतों और आदर्शों की विस्तार से चर्चा की।

विशिष्ट अतिथि मुख्य न्यायाधीश मुनिश्वरनाथ भंडारी ने कहा कि वास्तु, विज्ञान के साथ जुड़ा है। वास्तु के साथ विज्ञान को जोड़कर इसकी व्याख्या करना वर्तमान की जरूरत है।

कार्यक्रम का शुभारंभ तमिल गान के साथ हुआ। मंगलाचरण परमार परिवार की बहनों ने किया। स्वागत भाषण तेरापंथी माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंधन न्यासी घीसूलाल बोहरा ने एवं आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक प्रदीप सुराना ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रेक्षिता संकलेचा ने किया।

जैन विद्या परीक्षाएँ संपन्न

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में ऑनलाइन परीक्षाएँ आयोजित हुई। समण संस्कृति संकाय द्वारा निर्देशित जैन विद्या परीक्षा ऑनलाइन माध्यम से हुई। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्त्वावधान में तथा श्रमण संस्कृति संकाय के तेलंगाना आंध्र आंचलिक प्रभारी पदम के मार्गदर्शन में जैन विद्या परीक्षा का कार्य व्यवस्थित रहा।

समण संस्कृति संकाय द्वारा नियुक्त, केंद्र व्यवस्थापक संगीता गोलछा ने बताया कि साध्वीवृंद की प्रेरणा से जैन विद्या परीक्षा की लहर चली। साध्वीवृंद ने सपरिवार परीक्षा का लक्ष्य समाज को दिया और उसकी निष्पत्ति रही। कई परिवारों ने सपरिवार परीक्षा में सहभागिता दर्ज करवाई। जैन विद्या परीक्षा में तकनीकी सहयोग में लाडनूं के कार्यालय का योगदान रहा।

कालूगणी का जन्म जयाचार्य युग में : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १६ अक्टूबर, २०२२

आचार्य श्रेष्ठ आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है कि भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कुछ दार्शनिक दुःखवादी हुए हैं। वे दुःख को मानने वाले होते हैं। पतंजलि, साख्य दर्शन और बौद्ध दर्शन में व जैन आगम में भी दुःख की बात बताई गई है। जन्म, जरा, रोग, बुढ़ापा आदि अनेक दुःख संसार में हैं।

भगवती सूत्र में बताया गया है कि संसार में सुख भी है और दुःख भी है। नैरयिक होते हैं, वे एकांत दुःख का वेदन करते हैं। फिर भी वे कभी-कभी साता का भी अनुभव करते हैं। जब तीर्थंकरों के कल्याणक महोत्सव का समय आता है, तब उनको सुखानुभूति होती है। चारों प्रकार के देव एकांत साता का वेदन करते हैं, किंतु कभी-कभी वे भी असाता का वेदन करते हैं। तिर्यंच और मनुष्य विमात्रा यानी कभी सुख, कभी दुःख का वे वेदन करते हैं।

परम सुख मुक्ति को प्राप्त करना अध्यात्म की साधना का लक्ष्य हो सकता है। जैन धर्म में भी साधना-मुक्ति की बात आती है। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ में पूर्व में दस आचार्य हुए हैं। इनमें से

डालगणी किसी आचार्य द्वारा नियुक्त आचार्य नहीं बने थे।

परमपूज्य कालूगणी ने स्वयं सहित चार आचार्य देख लिए थे और दो अपने सुशिष्यों को दीक्षित भी कर दिया जो आगे उनके उत्तराधिकारी बने थे। जयाचार्य जब बीदासर में विराजमान थे तब उस समय बात आई थी कि यहाँ से चार कोस पर एक शिशु का जन्म हुआ है, जो तेरापंथ का भावी आचार्य होगा। कालूगणी का जन्म जयाचार्य युग में हुआ था।

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी से कालूगणी के बारे में कुछ-कुछ श्रवण का अवसर मिला है। इतिहास पढ़ने से भी जानकारियाँ मिल सकती हैं। पूज्य माणकगणी के बाद भावी आचार्य के रूप में मुनि कालू का नाम भी उभरा था। डालगणी के शासन में मुनि कालू साधारण साधु के रूप में रहे थे।

डालगणी का अपना जीवन रहा है। वे अग्रणी रूप में विचरे थे। यात्राएँ भी बहुत की थीं, मुनि जीवन में तीन बार कच्छ की यात्रा की थी। उनमें व्याख्यान देने की भी कला थी। डालगणी ने मुनि कालू छापर को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। पर प्रगट रूप में युवाचार्य नहीं बनाया था। प्रच्छन्न रूप में नियुक्ति थी। आचार्य के सामने युवाचार्य हो तो आचार्य को राहत मिल सकती है। डालगणी ने शिक्षाएँ भी नहीं फरमाई थी।

डालगणी से एक शिक्षा ये अवश्य ली जा सकती है कि वर्तमान आचार्य किसी चारित्रात्मा को आगे लाने का प्रयास करे तो बाद के आचार्य भी उनको महत्त्व देते रहें। डालगणी कहते थे मुनि मगनजी को परंतु लक्ष्य मुनि कालू को सुनाने का होता था। कालूगणी ने उस इंगित को अनुसरण कर मुनि मगन जी को उतना ही महत्त्व दिया था। डालगणी हमारे धर्मसंघ के इतिहास में तेजस्वी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। कालूगणी ने अपने हिसाब से धर्मसंघ को आगे बढ़ाया था। हम डालगणी और कालूगणी दोनों से प्रेरणाएँ लेते रहें।

मुनि कुमार श्रमण जी ने पूज्य कालूगणी के बारे में समझाया कि छापर का नाम कालूगणी से जुड़ा है। कालूगणी का इतिहास तेरापंथ का अनूठा इतिहास है। कालूगणी के जीवन पर सबसे ज्यादा असर मघवागणी का था। उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। डालगणी भी विलक्षण आचार्य थे।

मुनि वर्धमान कुमार जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी मृदुला कुमारी जी, साध्वी अखिलयशा जी, समणी जिज्ञासाप्रज्ञा जी, समणी कुसुमप्रज्ञा जी ने कालूगणी के प्रति अपनी भावना अभिव्यक्त की। बैद परिवार, शांति दुगड़, नाहटा परिवार, प्रेम भंसाली ने भी अपनी श्रद्धासिक्त भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

बैंगलोर।

संस्था शिरोमणि जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, बैंगलोर द्वारा सभा भवन गांधीनगर में गोवा, तेलंगाना, गुंतकल एवं कर्नाटका की सभी सभाएँ तथा उपसभाओं का 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र : कार्यशाला का शुभारंभ मुनिश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया।

मंगलाचरण सभा के सदस्यों द्वारा तथा स्वागत गीतिका ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन महासभा अध्यक्ष द्वारा किया गया।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि कार्यकर्ता का मतलब ही होता है कार्य को करने वाला। कार्यकर्ता की पहचान नाम से नहीं काम से होती है। कार्यकर्ता कार्यक्रम को नहीं कार्य को अधिक महत्त्व देता है। कार्यकर्ता का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक तत्त्व है–कर्तव्य बोध, अपने कर्तव्य बोध को समझना। अपने समय व स्वार्थ का विसर्जन कर, संघ के विकास के लिए अपने संपूर्ण जीवन का बलिदान देना ही एक कार्यकर्ता की पहचान है।

मुनि भरत कुमार जी ने अपने अंदाज में कहा जो होता है धर्मसंघ का कार्यकर्ता अपने कर्तृत्व से जोश, होश, अक्षयकोश को भरता, साधु-संतों की व धर्मसंघ की सेवा करके कर्मों को हरता वह श्रावक अपनी आत्मा को निखारता है। बालमुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए महासभा द्वारा संचालित विभिन्न आयामों की जानकारी दी। बैंगलोर सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत करते हुए सभा द्वारा अभी तक आयोजित कार्यों की जानकारी दी। महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत ने महासभा द्वारा निर्देशित कार्यों को सभाओं द्वारा कैसे संचालित हो तथा निष्पत्ति निकाली जा सके। न्यासी महासभा मूलचंद नाहर, भवन निर्माण संयोजक हीरालाल मालू, दक्षिणांचल प्रभारी प्रकाश चंद लोढ़ा ने विचार व्यक्त किए। संचालन उपाध्यक्ष रमेश कोठारी ने किया। आभार सभा मंत्री गौतम मांडोत ने दिया।

प्रशिक्षण सत्र-प्रथम

महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल तथा महामंत्री विनोद बैद ने सभा संचालन मार्गदर्शिका पर आधारित पूर्ण विस्तार से सभाओं का संचालन कैसे हो इस विषय पर प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण सत्र-द्वितीय

महासभा अध्यक्ष एवं महामंत्री ने 'श्रावक संदेशिका' पर आधारित एवं सभी नियमों की सभा कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल सिंघी व संगठन मंत्री धर्मेश कोठारी ने विस्तृत जानकारी दी। मुनिश्री द्वारा निर्देशित लघु प्रतियोगिता का आयोजन किया। सभी सभाओं के पदाधिकारियों की जिज्ञासाओं का समाधान महासभा के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। आभार सहमंत्री राजेंद्र बैद ने किया।

मुनिश्री के उद्बोधन एवं मंगलपाठ से सत्र का समापन किया गया। कार्यशाला में कुल २५ सभा एवं उपसभाओं की सहभागिता रही। टीपीएफ राष्ट्रीय महामंत्री हिम्मत मांडोत, अणुविभा राष्ट्रीय संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, महासभा कार्यकारिणी सदस्य, सभी सभाओं के पदाधिकारीगण एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। संयोजक रमेश कोठारी, उपाध्यक्ष सुनील बाफना, उपाध्यक्ष अरविंद सिंघी, सहमंत्री विनय बैद, राजू धोका का विशेष श्रम रहा।

परमपूज्य कालूगणी ने दिया तेरापंथ धर्मसंघ को...

(पृष्ठ १६ का शेष)

पूज्यप्रवर ने सुजानगढ़ की सुश्राविका सुशीला सुराणा से १०८ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुनि योगेश कुमार जी ने पूज्य कालू-तुलसी के संस्मरणों को सुनाते हुए बताया कि पूज्यप्रवर की कृपा से धर्मसंघ को पूज्य कालूगणी की शिक्षाओं को जानने का अवसर मिला है। तेरापंथ में जितने आचार्य हुए हैं, अपने आपमें विलक्षण हुए हैं। पूज्य कालूगणी में लीडरशिप की कुशलता थी। व्यक्तित्व निर्माण की उनमें कला थी। वे कोमल भी थे तो अनुशासन में कठोर थे। वे माता-पिता के समान थे। वे कुंभकार थे। उनकी दृष्टि पैनी थी जो २२ वर्ष के युवा संत को धर्मसंघ का दायित्व सौंप दिया था।

साध्वी जितेंद्रप्रभा जी, साध्वी काम्यप्रभा जी, साध्वी संघप्रभा जी, साध्वी प्रयांशुप्रभा जी ने कालूगणी अभिवंदना में अपनी श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की। चमन दुधोड़िया, राहुल दुधोड़िया, उमराव चोरड़िया, सुरेंद्र बैद ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ दूसरों को कष्ट पहुँचाना कदाचार है और दूसरों को सुख पहुँचाना तथा कष्ट न पहुँचाने का संकल्प सदाचार है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

परमपूज्य कालूगणी की आचार्य महाप्रज्ञ जी पर विशेष कृपा थी : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २१ अक्टूबर, २०२२

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि जीव सबसे अल्प-आहार किस समय करता है? हमारे जीवन के साथ आहार का गहरा संबंध है।

आहार के अनेक प्रकार हैं—ओज आहार, कवल आहार, रोम आहार आदि। उत्पत्ति के प्रथम समय में और जीवन के अंतिम समय में जीव सबसे कम आहार करता है। सब संसारी प्राणियों के लिए यह नियम है। कारण कि प्रथम समय में स्थूल शरीर का निर्माण भी नहीं होता। जीवन के अंतिम समय में भी आत्म-प्रदेशों का संहरण हो जाता है। आत्म प्रदेश संकुचित होकर शरीर के अल्प अवयवों में रह जाते हैं। इस आहार का ये सिद्धांत ग्रंथों में मिलता है।

हमें आहार का संयम रखना चाहिए कि खाकर खराब क्यों करें। हर मनुहार को मानना जरूरी नहीं होता। भोजन में विवेक भी हो, क्यों खाएँ, क्या न खाएँ?

हम कालूगणी अभिवंदना सप्ताह मना रहे हैं। मैंने पूज्य कालूगणी के शिष्यों को भी देखा है। साध्वियों को भी देखा है। कालूगणी के प्रति उनके मन में एक श्रद्धा का भाव भी देखा। उन्होंने मेरे पर भी कृपा रखी। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की तो विशेष कृपा थी ही।

कालूगणी और महाप्रज्ञ जी का गुरु-शिष्य का संबंध था। कालूगणी ने बालक नथमल को सरदारशहर में दीक्षित किया था। कालूगणी ने मुनि नथमल को मुनि तुलसी से संपृक्त करा दिया। छोटे बाल मुनि ने कालूगणी से पौष प्राप्त किया था। कालूगणी के कई शिष्य उभर कर सामने आए हैं। बाल मुनि नथमल पर कालूगणी की विशेष कृपा रही थी।

मुनि नथमल का व्यक्तित्व भी निखरा व एक महान दार्शनिक बनकर सामने आ गए। उनका साहित्य भी सामने आया। कालूगणी की प्रेरणा से ही उन्होंने हमें शब्दानुशासनम् का आठवाँ अध्याय जो प्राकृत भाषा में है, सीखा था जो आगे आगम संपादन में बहुत काम आया था। धर्मसंघ में वे आगे बढ़े। गुरुदेव तुलसी ने निकाय सचिव, युवाचार्य पद और आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी बड़ी उम्र में आचार्य बने थे, लंबा आयुष्य मिला था। यात्राएँ भी की थीं। वे हमारे धर्मसंघ के विलक्षण आचार्य थे। आगम संपादन में उनका बड़ा योगदान था। आचार्य महाप्रज्ञ जी में भी करुणा, वत्सलता थी। उनमें ज्ञान-वैदुष्य था। प्रवचन भी अच्छा फरमाते थे। कालूगणी से दीक्षित आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अनेक अवदान धर्मसंघ को दिए थे। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान उनमें विशेष हैं।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि परमपूज्य कालूगणी कुशल कलाकार थे। जीवन के कुंभकार थे। कितने मिट्टी के लोदों को कुंभ का आकार दिया। कितने व्यक्तित्वों का निर्माण किया था, उनमें से एक थे बालमुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ)। मुनि नथमल जी का कालूगणी ने विशेष ध्यान रखा, अनेक प्रकार से प्रशिक्षण प्रदान कराया, जो मुनि नथमल के जीवन में प्रगति कराने वाला था। वह शिष्य भाग्यशाली होता है, जिसके निर्माण की

विधि गुरु लिखते हैं।

साध्वीवृंद ने कव्वाली से, साध्वी युक्तिप्रभा जी ने भी अपनी श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति भी दी।

अणुव्रत समिति से प्रदीप सुराणा, महिला मंडल ने गीत से अपनी भावना व्यक्त की।

गुरुदेव तुलसी की एक कृति–'गृहस्थ को भी अधिकार है धर्म करने का', उसका अंग्रेजी अनुवाद 'The Cristal Libretion for House Holders' जो जैविभा द्वारा प्रकाशित हुई है, पूज्यप्रवर के करकमलों में लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने पुस्तक के संदर्भ में अपने पावन उद्गार अभिव्यक्त करवाए। जैविभा शिक्षा, साधना, शोध के बारे में विशेष कार्यरत है। साध्वी ऋद्धिप्रभा जी ने इसका अनुवाद किया है। इनका भी विकास होता रहे। समणी अमलप्रज्ञा जी भी विदेश की प्रेक्षा यात्रा करके आई हैं। पूरी जानकारी दी।

साध्वी ऋद्धिप्रभा जी ने पुस्तक के विषय में अपने भाव अभिव्यक्त किए। स्वतंत्र जैन जो ह्यूस्टन अमेरिका से आए हैं, वहाँ की जानकारी प्रदान की। ह्यूस्टन सेंटर के महत्त्व के बारे में बताया। समणी नियोजिका अमलप्रज्ञा जी ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

परमपूज्य कालूगणी ने दिया तेरापंथ धर्मसंघ को सबसे युवा आचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, २० अक्टूबर, २०२२

कालूगणी अभिवंदना सप्ताह का आज चौथा दिन कालूगणी और तुलसी विषय पर आधारित दिवस। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवती सूत्र की विवेचना करते हुए फरमाया कि भंते! क्या केवली इंद्रियों से जानता-देखता है। उत्तर दिया गया—गौतम! यह अर्थ संगत नहीं है। यह किस अपेक्षा से? केवली पूर्व दिशा में परिमित-अपरिमित को जानता है। यावत् केवली का दर्शन विरावरण है, इस अपेक्षा से।

हम इंद्रियों के द्वारा ज्ञान करते हैं। केवली के पास तो प्रत्यक्ष अतीन्द्रिय ज्ञान होता है। हमारे लिए इंद्रियों का बड़ा उपयोग है। इंद्रियों का उपयोग क्या किया जाता है, वो खास बात है। इंद्रियों का सदुपयोग करने वाला आदमी बढ़िया होता है। हम इंद्रियों का सदुपयोग करने का प्रयास करें।

परमपूज्य कालूगणी और आचार्य तुलसी ने अपनी इंद्रियों का कैसा उपयोग किया था। कितना अध्ययन किया था। परमपूज्य कालूगणी के इतने शिष्य थे। उनका अपना-अपना उपयोग हो सकता है। उपयोग करना खास बात है। उपयोग में लेने वालों का भी अपना कौशल होना चाहिए कि क्या उपयोग किया जाए।

कोई ऐसा अक्षर नहीं होता है, जो मंत्र के रूप में प्रणत न हो। कोई ऐसा मूल नहीं जो दवा के रूप में काम न आ सके। कोई ऐसा आदमी नहीं जिसमें सामान्यतया कोई योग्यता न हो। महत्त्वपूर्ण बात है कि उपयोग करने वाला ज्ञानवान हो। परमपूज्य कालूगणी के पास सामग्री थी, मुनि तुलसी जैसे कई संत थे। उन्होंने अपने ढंग से उपयोग किया है। मूर्ति बनाने लायक पत्थर भी हो।

कालूगणी को एक शिष्य मिल गया जिसके लिए उन्होंने निश्चय कर लिया कि इस छोटे शिष्य को अपने पीछे दायित्व संभालने के लिए प्रयुक्त कर सकूँ। मुनि तुलसी को २२ वर्ष से भी कम आयु में अपना युवाचार्य बना दिया। मुनि मगनलाल जी ने कालूगणी को मुनि तुलसी के लिए और संतुष्ट कर दिया था। तीन दिन का युवाचार्य काल रहा। मुनि तुलसी को भी गुरुदेव कालूगणी के सान्निध्य में प्रायः रहने का अवसर मिला।

कालूगणी की मुनि तुलसी पर विशिष्ट कृपा थी। छोटी उम्र के आचार्य को मुनि मगनलाल जी का भी विशेष सहयोग मिला था। हमें पूज्य कालूगणी जैसे आचार्य मिले तो आचार्य तुलसी जैसे लंबे आयुष्य वाले आचार्य भी मिले। मैं दोनों आचार्यों को श्रद्धा से वंदन-नमन करता हूँ। (शेष पृष्ठ १५ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**